ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

अमर ज्योति

वर्ष : 66 अंक : 12 दिसम्बर, 2015

प्रकाशक :
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक :
डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

व्यवस्थापक:
प्रमोद कुमार ऐचरा

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125 001 (हरियाणा)
फोन : 8059027929
email: editor@amarjyotipatrika.com,
info@amarjyotipatrika.com
Website : www.amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय :
फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित व्यवस्थापक के अतिरिक्त सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक सदस्यता : ₹ 70
आजीवन सदस्यता : ₹ 700

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

'अमर ज्योति'
का ज्ञान दीप अपने
घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सम्पादकीय	3
सबद	4
सुरजनदासजी कृत साखी छन्दां की	5
भक्ति आन्दोलन और जाम्भाणी साहित्य	7
गुरु जाम्भोजी की वाणी में मानवतावादी दृष्टि	11
जीवन	12
गुरु जांभोजी की वाणी : वैश्विक परिदृश्य एवं उपादेयता	13
पर्यावरण संरक्षण और बिश्नोई पंथ	15
योग को जानो और अपने आप को पहचानो	17
अमर बलिदानी उमाराम जाट	18
समय के साथ परिवर्तन	19
गुरु का आशीर्वाद	19
दर्शन तथा धर्म का मर्म	20
रामकथा में अभिव्यक्त प्रकृति प्रेम	22
जीव दया पालणी, रूंख लीलो न ही घावै	25
पर्यावरण की चिन्ताओं से बेखबर भारत	26
बेटी ईश्वर की अनुकंपा है	28
सृष्टि बचाओ : नियम	29
सामाजिक हलचल	30-34

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

सम्पादकीय

क्षमा दया हिरदै धरो

क्षमा और दया मानवता के आभूषण हैं इसलिए गुरु जंभेश्वर जी ने इनको अपनी आचार संहिता में सुशोभित किया है। एक कहावत है–"To error is human and to forgive is divine' अर्थात् मनुष्य गलती का पुतला है और क्षमा करना देवत्व है। हम सभी जाने अनजाने में प्रतिदिन अगणित गलतियां करते हैं और स्वभाववश सॉरी 'Sorry' भी कहते हैं परन्तु जब अपने प्रति अपराध करने वाले के प्रति क्षमा करने का प्रश्न आता है तो हम अपना आपा खोने लगते हैं। अपने प्रति किए गये अपराध को भूलकर सामने वाले को क्षमा करना एक वीरतापूर्ण कार्य है, जिसे करना कठिन अवश्य है परन्तु इसका परिणाम अत्यन्त सुखद होता है। कुछ क्षमा न कर सकने वाले सज्जन इसे कायरता मानते हैं परन्तु वास्तव में यह वीरों का आभूषण है– 'क्षमा वीरस्य भूषणम्'। एक समर्थ व सक्षम व्यक्ति ही दूसरे को क्षमा कर सकता है क्योंकि इसमें क्रोध को शान्ति से जीता जाता है, जो हर किसी के वश की बात नहीं है।

'क्षमा और दया' को धारण करने से प्रतिशोध, प्रतिशोध, प्रतिकार, निर्दयता, वाद-विवाद, झगड़े और हिंसा से छुटकारा मिलता है तथा दया, सहानुभूति, उदारता, प्रेम, संतोष एवं वैराग्य की भावना का विकास होता है। किसी को उसकी भूल के लिए क्षमा करके उसको आत्मग्लानि से मुक्त करना एक बहुत बड़ा उपकार है। इसके विपरीत किसी को उसकी भूल के लिए क्षमा न करके दण्ड देना सामने वाले के जीवन में तो विष घोलता ही है, साथ ही दण्ड देने वाले को भी मानसिक सुख नहीं मिलता है। किसी को क्षमा न करके सुख खोजना ऐसा ही है जैसे स्वयं विषपान करना और आशा करना कि उसका प्रभाव दूसरों पर पड़े।

दया और क्षमा केवल प्रदर्शन की वस्तु नहीं होती अपितु अंतःकरण की निधि होती है। क्षमा करने से हृदय निर्मल होता है और उसमें शांति की बेल पनपती है। क्षमा से अहिंसा को नया आयाम मिलता है। क्षमा जीवन जीने की निर्दोष प्रक्रिया है जिससे मनोबल बढ़ता है। क्षमा और दया ऐसे रत्न हैं जिन्हें संतों ने सदैव सराहा है तथा उनकी आत्मा ने पहना है। यह समता का आधार तथा सामाजिक शिष्टता का अलंकरण होती है। क्षमा को धारण किए बिना पशुभाव से छुटकारा संभव नहीं है। अपराध या भूल करने वाला तो जाने अनजाने में गलती कर चुका होता है और वह अपराधबोध से ग्रस्त होकर ही क्षमा मांगता है, क्षमा मांगने से उसका अपराधबोध तो समाप्त हो जाता है फिर यदि हम उसे क्षमा नहीं करते तो कालांतर में उस बोध से हमें ग्रस्त होना पड़ता है, जो मानसिक पीड़ा का कारण बनता है।

वस्तुतः क्षमा और दया करने से अहंकार गलता है, सुसंस्कार पलता है। क्षमा-शीलवान का शस्त्र है, अहिंसा का अस्त्र है, प्रेम का परिधान है, विश्वास का विधान है, सृजन का सम्मान है, नफरत का निदान है, पवित्रता का प्रवाह है, नैतिकता का निर्वाह है, सद्गुण का संवाद है, अहिंसा का अनुवाद है, दया की ज्योति है, मानवता का मोती है। इससे प्रतिशोध की भावना का नाश और मैत्रीभाव का विकास होता है।

हमें चाहिए कि हम गुरु महाराज के वचनों की पालना करते हुए दया और क्षमा रूपी तप करके दूसरों को सुख दें व स्वयं पुण्य के भागी बनें।

सबद–47

दोहा–

लोहा पांगल यूं कहै, जाम्भेजी सूं भेव।
जोग कछोटी हम लई, सुणिये पूर्ण देव।

जाम्भोजी से पुन: लोहापांगल ने योग रहस्य को जानने के लिये प्रश्न किया कि हे पूर्णदेव! हम अन्य साधारण योगियों जैसे नहीं है हमने अपनी साधना को पूर्णतया किया है और हम लोग योग की कसौटी पर खरे उतरे हैं। कई बार हमारी परीक्षा हो चुकी है। फिर आप स्वीकार क्यों नहीं करते। तब यह सबद सुनाया–

सबद–47

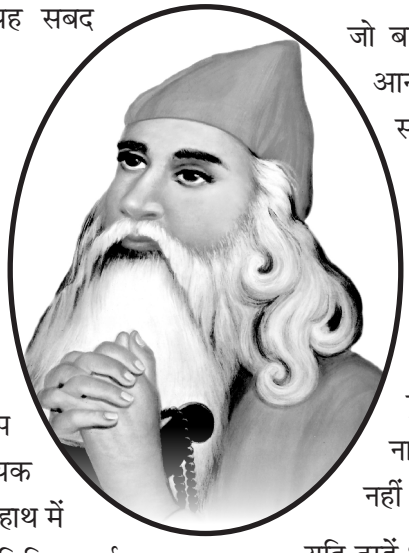

ओ३म् काया कंथा मन जो गूंटो,
सीगी सास उसासूं।
मन मृग राखले कर कृशाणी, यूं म्हे
भया उदासूं।

भावार्थ– वस्त्र से बनी हुई भार स्वरूप कंथा रखना योगी के लिये अत्यावश्यक नियम– कर्म नहीं है तथा गले में गूंटो हाथ में सीगी रखना तथा बजाना कोई नित्य नैमितिक कर्म नहीं है तथा क्योंकि यह तुम्हारा पंचभौतिक शरीर ही कंथा गुदड़ी है जो आत्मा के ऊ4 पर आवरण रूप से स्वत: ही विद्यमान है तथा तुम्हारा यह चंचल मन जब स्थिर हो जायेगा तो हृदयस्थ गूंटा ही होगा। मन की एकाग्रता को ही गूंटो मान लेना और तुम्हारा श्वांस प्रश्वांस ही सींगी है। जो सदा ही बजती रहती है। तुमने केवल बाह्य प्रतीकों को ही सत्य मान रखा है।

असलियत से दूर हट गये है इस प्रकार से इस मन रूपी चंचल मृग से स्वकीय साधना रूपी खेती की रक्षा करना तभी तुम्हारा योग रूपी फल पककर सामने आयेगा। इसलिये मैंने तो इन आन्तरिक योग के चिह्नों को धारण कर लिया है जिससे बाह्य चिह्नों से उदासीन हो चुका हूँ।

हम ही जोगी हम ही जती, हम ही सती, हम ही राखबा चीतूं।
पंच पटण नव थानक साधले, आद नाथ के भक्तूं।

जो बाह्य चिह्नों से उदासीन होकर केवल आन्तरिक चिह्नों को धारण करेगा वही सच्चा योगी होगा। वही पूर्ण यती होगा और वही सती तथा समाधिस्थ होकर ब्रह्म का साक्षात्कार करने वाला होगा। हे योगी! मैने तो यह सभी कुछ धारण कर लिया है। इसलिये मैं अपने को योगी, यति, सति तथा सिद्ध पुरुष कह सकता हूँ। किन्तु हे अनादि नाथ के भक्त! तुम्हारे में अभी ये लक्षण नहीं आये है।

यदि तुम्हें भी सच्चा योगी बनना है तो सर्वप्रथम तो पांच प्राणों की गति अवरोध कर क्योंकि ये पांच ही शरीर को जीने की शक्ति देते हैं। ये जब निकल जाते हैं तो यह शरीर मृत हो जाता है इसलिये ये पट यानि श्रेष्ठ है। जब प्राणों की गति में प्राणायाम द्वारा अवरोध होगा तब इनसे जुड़े हुऐ मन, बुद्धि, चित, अहंकार स्वत: ही शांत हो जायेंगे तथा इन चतुर्विध अन्त:करण से जुड़ी हुई पांच ज्ञानेन्द्रियां भी साधित हो जायेगी। इसलिये पांच पटण एवं नव थानकों की साधना करनी होगी।

साभार– जंभसागर

सुरजनदासजी कृत साखी छन्दां की

बाबो मिलियो त्रिभुवण तार, जोति विराजे निज थले।
आवियो गुरु आप अलेख, साच सबद जग सांभले।
सबद साचा सांभल्या, परतीत आई मोमणां।
पंथ को झणकार बाजै, पाप छूटै अति घणां।
आण भरम कुथान पूजा, तजै सकल विकार।
आश गुरु की कीजिये, मिलियो त्रिभुवण तार।
जोति विराजे निज थले।1।

बरतियो धनि धनि कार, धन्य मुहूरत धन्य घड़ी।
झीणां सबद झणंकार, जोजन वाणी सुहावणी।
जोजन वाणी सुहावणी, जे सकल धर्म निवास।
हंस हींयाली परगटियो, अधिक कीजिये आस।
काम क्रोध विकार परहर, पंथ चाल्यो सार।
धर्म चोथे जुग सांभल्यो, बरत्यो धिन-धिन कार।
धिन मुहूरत धिन घड़ी।2।

गुरु कथियो केवल ज्ञान, सुकरत कर पहुंचा निज घरां।
सतगुरु कियो मिलाप, पांच सात नव करोड़ बारां।
पांच सात नव करोड़ बारां, मेली सी सुर लोय।
बात साचे श्याम की थे, जपो एक मन होय।
होम जाप समाध पूजा, धरो संभू को ध्यान।
ब्रह्म किरिया दाखवी, गुरु कथियो केवल ज्ञान।
सुकरत कर पहुंता निज घरां।3।

अवर न दूजो कोय, इण गुरु तणों पटंतरे।
गुरु धरियो भेख अनेक, सकल दया सतगुरु करे।
दया सतगुरु दाखवै, सहज शील संतोष।
आस गुरु की कीजिये, जो देवे तुठे मोख।
बलि बलि विसन बखाणिये, तरण तारण सोय।
श्याम साचो प्रगट्यो, और न दूजो कोय।
इण गुरु तणै पटंतरै।4।

प्रगट्यो कृष्ण मुरार, वैणे विसन बखाणिये।
करसी गुरु पूर्ण वाच, सबद श्याम पिछाणिये।
सबदे श्याम पिछाणिये नै, जे सुर मेलण काज।
सुरजन जन की वीणती, सदा जी राखो लाज।
साध संगति भगती हरि की, सुपह सिरजण हार।
सु गुरु जीवां तारसी, प्रगट्यो किसन मुरार।5।

भावार्थ-तीनों लोकों को तारने वाले भगवान विष्णु ही जाम्भेश्वरजी के रूप में आये है। जो ज्योति स्वरूप सम्भराथल पर विराजमान हुए है अवश्य ही भेंट कीजिये। गुरु स्वयं अलख निरंजन है वही यहां पर आये है। सत्य शब्दों का उच्चारण करते है। हे जगत के लोगों! सावधान हो जाओ! सत्य शब्द श्रवण करने से भक्तों को विश्वास हुआ है, धर्म के प्रति प्रेम जगा है। भूत प्रेतादि की पूजा करना तथा भ्रम को छोड़कर लोग सतपंथ के अनुयायी बने है। अन्य सभी कल्पित देवताओं की आसा छोड़कर एक गुरु की ही आस कीजिये। आप त्रिभुवन के स्वामी से मिलाप कर सकोगे। जो ज्योति स्वरूप निज थल पर अब भी विराजमान है।1।

चारों ओर से धन्य की ध्वनि गुजायमान हो रही है। धन्य है उस मुहूर्त एवं उस घड़ी नक्षत्र को जिसमें स्वयं परमेश्वर ने ही अवतार धारण किया है। सूक्ष्म तथा यथार्थ ज्ञान कराने वाले शब्दों की ध्वनि दूर-दूर तक सुनाई दे रही है। जब सभी मिलकर समवेत स्वर में गुरु वाणी का उच्चारण करते है तो सभी धर्म वहीं पर आकर निवास करते है। बोलने वाले तथा सुनने वाले कृत्य कृत्य हो जाते है। हंस ही मानों यहां मानसरोवर को छोड़कर आ गये है। ऐसे भक्त लोग एकत्रित होकर बैठे दिखाई देते है। सांसारिक आशा छोड़ करके गुरुदेव से ही सम्बन्ध स्थापित कीजिये। काम क्रोध आदि विकारों को त्याग करके सार रूप सद्पंथ पर चलें। यह कलयुग में धर्म की संभाल हुई है। चारों ओर धन्य धन्य कार हो रहा है। उस समय को भी धन्य है जिसमें गुरु देव प्रगट हुए।2।

गुरु ने कैवल्य ज्ञान का ही कथन किया है उस ज्ञान के प्रकाश में हम सुकृत करके अपने सच्चे घर को वापिस पहुंच जायेंगे। सतगुरु हमें पांच सात एवं बारह करोड़ से मिलान करा देंगे। चार युगों में तेतीस करोड़ पार पहुंच गये है हमें भी वहीं पर जाना है। वहां पर सुर लोक में देवताओं से मिलान होगा। यह वार्ता सच्चे श्याम सतगुरु की है इसलिये विश्वास करने योग्य है। हे जनों! आप लोग विष्णु का जप एक मन होकर करें। नित्य प्रति हवन विष्णु का जप गुरु देव की बताई हुई समाधी का ज्ञान प्राप्त करें। समाधी तक पहुंचने का प्रयास करें। ब्रह्म ने जो क्रिया बतायी है वह कैवल्य ज्ञान है जो समाधी में पहुंचा देता है। उसी ज्ञान के प्रकाश में सुक्रत करते हुए अपने सच्चे घर को अवश्य ही पहुंचे।3। गुरु देव जाम्भेश्वरजी जैसे अन्य गुरु संसार में मिलना असंभव है जो संसार सागर से पार उतार दे। भेश धारण करने वाले तो अनेक होंगे परन्तु दयालु सतगुरु इनके जैसे असंभव है। स्वयं दयालु होते हुए अन्य लोगों को भी दया का भाव सिखाते है तथा सहज ही में शील व्रतधारी तथा संतोषी होते हुए अन्य लोगों को भी सिखाते है। आसा केवल एक गुरु की ही कीजिये। जब वे संतुष्ट हो जायेंगे तो मुक्ति प्रदान करेंगे। बार-बार विष्णु का नाम स्मरण कीर्तन करें, वही तारने वाले देव है। हमारे गुरुदेव शिरोमणि है।4। स्वयं विष्णु भगवान प्रगट हुए है, अपने वचनों द्वारा विष्णु का ही भजन करना बतला रहे है। गुरु ने बारह करोड़ प्राणियों को उद्धार का वचन दिया था वह अवश्य ही पूर्ण करेंगे। शब्द से ही श्याम मुरारी की पहचान हो रही है। शब्दों में ही बताया है कि मैं आप लोगों को देवताओं से मिलान करवाने के लिये आया हूं। सुरजन जी विनती करते हुए कहते है कि हे देव! सदा ही हमारी लज्जा रखो। साधु पुरूषों की संगति हरि की भक्ति तथा सुमार्ग पर चलना यही जीवन का तथा धर्म का सार है। यह बताने के लिये सतगुरु का आगमन हुआ है इन्हीं सभी कारणों से सतगुरु अवश्य ही हमें पार उतार देंगे। क्योंकि स्वयं कृष्ण मुरारी ही प्रगट हुए है।5।

साभार - साखी भावार्थ प्रकाश

समय बड़ा अनमोल

सोच समझ कर रख कदम
नाप तोल कर बोल।
कबीरा तेरे गांव में,
समय बड़ा अनमोल॥
बिना किसी अपराध के बोल न ऊंचे बोल।
चौराहे पर बैठ कर कभी न गठरी खोल॥
लिखने वालों ने लिखा
सारी दुनिया गोल।
इसीलिए इस शास्त्र को,
नाम दिया भूगोल॥
पत्थर के मोती नहीं,
मन के मोती रोल।
तन की आंखें बन्द कर,
मन की आंखें खोल॥
कबीरा तेरे गांव में समय बड़ा अनमोल।

-**तुषार बिश्नोई,** कृष्णापुरी, मुरादाबाद (यूपी)

भक्ति आन्दोलन और जाम्भाणी साहित्य

मध्यकालीन भक्ति आंदोलन भारतीय इतिहास में घटित एक ऐसी युगान्तरकारी घटना है जिसने भारतवर्ष को पहली बार एक खरी तथा सही पहचान प्रदान की थी। यह एक ऐसा आंदोलन था जिसमें क्षेत्र, जाति, धर्म, सम्प्रदाय के सब बंधन टूट जाते हैं और समग्र राष्ट्र की शिराओं में ऐसा ज्वार उफनता है कि पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण मिलकर एक हो जाते है और भक्ति की एक ऐसी विराट धारा की सृजन करते हैं, जिसमें डुबकी लगा कर कोटि-2 साधारणजन सदियों से तप्त अपनी छाती शीतल करते है, एक नया विश्वास प्राप्त करते हैं और आत्म सम्मान के साथ जीने की नयी शक्ति भी। भक्ति सदैव से ही भारतीय जनमानस का अभिन्न अंग रही है, परन्तु भक्ति ने जैसा एक आंदोलन का रूप मध्यकाल में धारण किया वैसा पहले कभी नहीं देखा गया था। इस भक्ति आंदोलन की उपज व विकास को लेकर विद्वानों ने पर्याप्त विचार किया है तथा उतने ही उनमें मतभेद भी हैं। मध्यकालीन भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य को आलोचना के केन्द्र में लाने और इसके महत्त्व को उद्घाटित करने का श्रेय आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को जाता है, हालांकि उनकी कुछ स्थापनाएं तर्कसंगत नहीं है।

भक्ति आंदोलन के उद्भव और फैलाव को लेकर यह उक्ति बहुत सटीक व प्रचलित है- "भक्ति द्राविड़ ऊपजी, लाए रामानन्द। प्रकट किया कबीर ने, सप्त द्वीप नवखण्ड।" इस मत के अनुसार भक्ति का प्रारम्भ दक्षिण में हुआ था और उत्तर में इसके फैलाव का श्रेय आचार्य रामानन्द जी को जाता है तथा इसे जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कबीर तथा उनकी परम्परा के संत भक्तों ने किया। इसी बात को और अधिक पुष्ट करता संस्कृत का एक श्लोक है जो श्रीमद् भागवतमहात्म्य' में संग्रहित है-

उत्पन्ना द्रविड़े साहं वृद्धिं कर्नाटके गता।
क्वचित्क्वचिद् महाराष्ट्रे गुर्जरे जीर्णतां गता।
तत्र घोरे कलेयोगात पाखण्डे खंडिताक का।
दुर्बलाहं चिरंयाता पुत्राभ्यां सह मन्दताम्।
वृन्दावनं पुनः प्राप्य नवीनैव सरूपिणी।
जातां युवती, सम्यक् श्रेष्ठरूपा तु सांप्रतम्॥[1]

अनेक शोधों से स्पष्ट हो चुका है कि दक्षिण के आलवार भक्तों से ही भक्ति आंदोलन का सूत्रपात होता है। आलवार भक्तों से होता हुआ यह आंदोलन नाथमुनि, यमुनाचार्य, रामानुजाचार्य, रामानन्द, वल्लभाचार्य, मध्यवाचार्य, गुरु जाम्भोजी, गुरु नानक, कबीर, विष्णु स्वामी आदि महापुरुषों के हाथों में पला-बढ़ा। वैष्णव और शैव के कागारों में भी कुछ समय तक यह आन्दोलन बंधा रहा। उत्तर में इसके फैलने को लेकर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' में की गई विवादित टिप्पणी इस प्रकार है- 'देश में मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर हिन्दू जनता के हृदय में गौरव, गर्व और उत्साह के लिए अवकाश न रह गया। उसके सामने ही उसके मन्दिर गिराये जाते थे, देव मूर्तियां तोड़ी जाती थी और पूज्य पुरुषों का अपमान होता था और वे कुछ न कर सकते थे। इसी स्थिति में अपनी वीरता के गीत न तो वे गा ही सकते थे और न बिना लज्जित हुए सुन ही सकते थे। आगे चलकर जब मुस्लिम साम्राज्य दूर तक स्थापित हो गया, तब परस्पर लड़ने वाले स्वतन्त्र राज्य भी नहीं रह गए। इतने भारी राजनीतिक उल्टफेर के नीचे हिन्दू जनता पर उदासी छाई रही। अपने पौरुष से हताश जाति के लिए भगवान की शक्ति और करुणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था?'[2]

आचार्य शुक्ल की इस इतिहास दृष्टि की आलोचना सबसे पहले व तीव्र आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने की थी। वे लिखते हैं- 'यह बात अत्यन्त उपहासास्पद है कि जब मुस्लमान लोग उत्तर के मन्दिर तोड़ रहे थे तो उसी समय अपेक्षाकृत निरापद दक्षिण में भक्त लोगों ने भगवान की शरणागति की प्रार्थना की। मुस्लमानों के अत्याचार के कारण यदि भक्ति की भावधारा को उमड़ना था तो पहले उसे सिंध में, फिर उत्तर भारत में प्रकट होना चाहिए था, पर प्रकट हुई वह दक्षिण में।'[3]

इस विषय में डॉ. राजमल बोरा लिखते हैं- 'जो विद्वान भक्ति को आन्दोलन के रूप में स्वीकार करते हैं और इस आन्दोलन का प्रधान कारण इस्लामी संस्कृति

की प्रतिक्रिया बतलाते हैं, उन्हें इस बात पर विचार करना होगा कि जब भक्ति का आरम्भ हुआ, उस समय इस्लामी संस्कृति इस देश में पहुंची नही थी।'[4] इस बात को आगे बढ़ाते हुए आचार्य द्विवेदी लिखते हैं- 'भारतीय पाण्डित्य ईसा की शताब्दी बाद आचार-विचार और भाषा के क्षेत्रों में स्वभावत: ही लोक की ओर झुक गया था। यदि अगली शताब्दियों में भारतीय इतिहास की अत्यधिक महत्त्वपूर्ण घटना अर्थात् इस्लाम का प्रमुख विस्तार न भी घटी होती तो भी वह इसी रास्ते जाता। उसके भीतर की शक्ति उसे इसी स्वाभाविक विकास की ओर ठेले जा रही थी।'[5]

अन्य भी अनेक विद्वानों ने भक्ति आन्दोलन के उद्भव और विकास में परोक्ष-अपरोक्ष रूप से इस्लाम के प्रभाव या हस्तक्षेप को नकारा है। भक्ति आन्दोलन केवल एक धार्मिक आंदोलन नहीं था बल्कि एक बहुत बड़ी सांस्कृतिक घटना थी। इस भक्ति आंदोलन का संवाहक भक्ति साहित्य (जो काव्य रूप में) है। 'भक्ति आन्दोलन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस आन्दोलन ने भारतवर्ष को आधुनिक भाषाओं की प्राणवता (नया जीवन) प्रदान की। तमिल, मलयालम, कन्नड़, तेलगु, मराठी, गुजराती, उड़िया, बंगला, असमी, सिंधी, पंजाबी, हिन्दी और इन भाषाओं से सम्बन्धित बोलियों में भक्ति साहित्य मिलता है। सच तो यह है कि भारतवर्ष की प्रधान आधुनिक भाषाएं प्राय: अपने उद्भव काल में भक्ति साहित्य से सम्बद्ध रही है।'[6] जैसा कि हमने पहले कहा कि भक्ति आंदोलन ने क्षेत्र, भाषा, धर्म-सम्प्रदाय की सब सीमाओं को तोड़ दिया था और यह पूरे देश में व्याप्त हो गया था। इस आंदोलन की प्रबलता का कारण भी यही है कि इसने आधुनिक भारतीय भाषाओं को अपनाया था।

डॉ. रामविलास शर्मा ने भक्ति साहित्य को पुनर्जागरण के साथ जोड़ा है क्योंकि इस साहित्य ने निराशा में डूबी तत्कालीन जनता को एक बहुत बड़ा सम्बल प्रदान किया था। मध्यकाल में चरमराती हमारी सनातन संस्कृति की रक्षा यदि किसी ने की थी तो वह भक्ति साहित्य ही था। 'किसी देश की संस्कृति में निरन्तरता यदि वर्तमान में भी रहती है और वह मिटती नही है तो उसे पहचानने की आवश्यकता है। उसके रूप भले ही बदल जाए किन्तु उसमें निहित अमूर्त भावना इस निरन्तरता को जीवित रखती है। अतीत और वर्तमान संस्कृति के बल पर ही जुड़े रहते है। इसी को हमारे यहां सनातनता कहा गया है। भारत का अतीत यदि वर्तमान में सनातन रूप में समकालीन बना हुआ है तो उसे भारतीय संस्कृति का प्रधान लक्षण मानना चाहिए। अनादि, अनन्त के प्रति भारतीय जन जीवन में जो प्रतिबद्धता पाई जाती है, उसको जीवित रखने में भक्ति साहित्य ने बहुत सहायता की है।'[7] भक्तिकालीन संत भक्त मात्र शब्द साधना करने वाले कवि नही थे अपितु बहुत बड़े क्रांतिकारी, चिंतक व समाज सुधारक थे। इन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में अपनी-अपनी भाषा में भक्ति आन्दोलन को न केवल गति प्रदान की अपितु इसे जन आन्दोलन भी बनाया, जो संस्कृत के माध्यम से संभव नहीं था।

मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन के जन आंदोलन बनने का एक कारण यह भी था कि इसके संवाहक संत-भक्त कवि स्वतन्त्र चिंतक थे। किसी प्रकार का प्रलोभन या भय इनके पास भी नही फटक सकता था। राजकीय वैभव या अनुकंपा से दूर रहकर स्वांत: सुखाय काव्य रचना ही इनका ध्येय था। जहां काव्य रचना का मूल उद्देश्य स्वामिन: सुखाय न होकर स्वांत: सुखाय होता है वहां लोकमंगल ही प्रमुख होता हैं। भक्ति में निर्गुण व सगुण दोनों वर्गों के कवियों ने जाति, धर्म, लिंग देश की सीमाओं से ऊपर उठकर जन-कल्याण का जो संदेश जिस प्रभावशाली व सरस ढंग से प्रसारित किया, वह न केवल भारतीय काव्य में अपितु विश्व काव्य में अन्यतम है। भक्ति साहित्य में अन्तर्निहित इसी शक्ति के कारण डॉ. वासुदेव सिंह ने लिखा है- 'भक्ति काव्य किसी विशेष वर्ग, जाति अथवा क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा है, अपितु समस्त भारतीय जीवन का प्रतिनिधि काव्य है।'[8]

भक्ति आन्दोलन और काव्य की व्यापकता और उदारता के विषय में आचार्य शुक्ल का मत भी यहां उल्लेखनीय है- 'कालदर्शी भक्त कवि जनता के हृदय को संभालने और लीन रखने के लिए दबी हुई भक्ति को जगाने लगे। क्रमश: भक्ति का प्रवाह ऐसा विस्तृत और

प्रबल होता गया कि उसकी लपेट में केवल हिन्दू जनता ही नहीं, देश में बसने वाले सहृदय मुस्लमानों में से भी न जाने कितने आ गये। प्रेम-स्वरूप ईश्वर को सामने लाकर भक्त कवियों ने हिन्दुओं और मुसलमानों, दोनों को मनुष्य के सामान्य रूप में दिखाया और भेदभाव के दृश्यों को हटाकर पीछे कर दिया।"[9]

भक्ति आंदोलन और साहित्य के चरित्र पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट पता चलता है कि इस आंदोलन की शक्ति व प्रबलता का कारण वे छोटी-2 भक्ति काव्यधाराएं थी जो विभिन्न क्षेत्रों व भाषाओं में स्वतन्त्र रूप से बहती हुई भी इसका अभिन्न अंग थी और अन्त:सलिला की भांति थी। भाषा कोई भी हो, इष्ट देव व कथन शैली कितनी भी निजी हो परन्तु उद्देश्य सभी का एक था- लोक का कल्याण। भक्ति आन्दोलन के योगदान, महत्त्व, स्वरूप और प्राणवता को तब तक ठीक से नहीं समझा जा सकता जब तक अन्त:सलिला की तरह बही इन सभी काव्यधाराओं को बराबर की महत्त्वशाली समझकर इनका अध्ययन नही किया जाता है। भक्ति साहित्य की इन विभिन्न वेगवती काव्यधाराओं में जांभाणी काव्यधारा न केवल महत्त्वपूर्ण व उल्लेखनीय स्थान रखती है अपितु अपनी कुछ निजी उपलब्धियों व विशेषताओं के कारण विशिष्ट स्थान की भी अधिकारी है।

विक्रम की सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में उत्तरी-पश्चिमी भारत में इस महान भक्ति आन्दोलन को गति प्रदान करने के लिए, निराशा व कदाचार में डूबे आमजन के हृदय को संभालने के लिए, लड़खड़ाती भारतीय संस्कृति को सहारा देने के लिए, प्रहलाद बाड़े के बिछुड़े 12 करोड़ जीवों का उद्धार करने के लिए विष्णु स्वरूप गुरु जाम्भोजी ने विक्रम सम्वत् 1508, भादो वदी अष्टमी को राजस्थान के वर्तमान नागौर जिले के पीपासर ग्राम में अवतार धारण किया था। गुरु जाम्भोजी ने अपने महिमामयी व्यक्तित्व, कल्याणकारी बिश्नोई पंथ और जनभाषा में कथित वेदमयी वाणी से भक्ति आंदोलन को एक आश्चर्यजनक स्फूर्ति प्रदान की थी। अपने देश-विदेश के विस्तृत भ्रमण और बिना किसी जाति, धर्म के भेदभाव के अपने पंथ में इच्छुक लोगों को दीक्षित करके एक बहुत बड़े भू-भाग पर भक्ति आन्दोलन की मंद पड़ती गति को ऊर्जा प्रदान की थी। उन द्वारा प्रवर्तित 'बिश्नोई पंथ' उत्तर भारत का प्रथम संत मंत है।[10] इस पंथ में शताधिक श्रेष्ठ कवि हुए हैं[11] जिन्होंने गत पांच शताब्दियों में भक्ति काव्यधारा को अपनी अमृतवाणी से आप्लावित किया है। इस काव्यधारा को जांभाणी साहित्य या जांभाणी काव्यधारा कहा जाता है।

गुरु जाम्भोजी से सम्बन्धित होने के कारण ही इसे जांभाणी नाम से अभिहित किया जाता है। यदि इसे हम परिभाषित करना चाहें तो कह सकते हैं कि- 'गुरु जाम्भोजी के महिमामयी व प्रेरक व्यक्तित्व, उनके सिद्धान्तों, वाणी व विचारधारा से प्रेरित होकर व उसे आधार बनाकर लिखा गया साहित्य, जांभाणी साहित्य है।'

जांभाणी साहित्य की रचना गुरु जाम्भोजी की विद्यमानता में ही प्रारम्भ हो गयी थी। उनके शिष्यों में तेजोजी, कान्होजी, आलमजी, अल्लूजी, उदोजी नैण, कुलचन्द राय, रायचन्द, केसोजी देहडू, पदम भक्त, डेल्हजी, लालचन्द नाई, अमिंयादीन, समसदीन, कान्होजी बारहट, आसनोजी, दीन महमंद, मेहोजी, रहमतजी आदि ने उच्च कोटि का काव्य रचा है, जो सभी हजूरी कवि कहलाते है। जांभाणी साहित्य में हजूरी कवि उन्हें कहा जाता है जो गुरु जाम्भोजी के समकालीन थे। गुरू जाम्भोजी के उत्तरवर्ती कवियों में वील्होजी सर्वप्रमुख है जिन्होंने बिश्नोई पंथ के साथ-साथ जांभाणी साहित्य को भी एक सुव्यवस्थित रूप प्रदान किया था। वील्होजी की शिष्य परम्परा में केसोजी और सुरजन जी ने जांभाणी साहित्य को एक नया आयाम प्रदान किया था। गोकुलजी, परमानन्दजी, उदोजी अडिग अठारहवीं शताब्दी में हुए इस काव्यधारा के प्रमुख कवि है। विक्रम सम्वत् की 20वीं शताब्दी में भी जांभाणी काव्य-धारा बिना किसी व्यवधान के बही है। संत साहबराम जी राहड़ ने सम्वत् 1947 में जंभसार महाकाव्य लिखा जो भक्ति साहित्य की अमूल्य निधि है। स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने हिन्दी गद्य क्षेत्र में भी जांभाणी साहित्य का पदार्पण करवाया। वर्तमान में भी अनेक जांभाणी साहित्यकार अपनी मेधा व लेखनी से अपना कर्त्तव्य मानकर इस साहित्यधारा को सींच रहे हैं।

अनेकानेक कारणों से जांभाणी साहित्य का

अपेक्षित प्रचार-प्रसार नहीं हो पाया है। और तो और इस काव्य धारा के संत भक्त कवियों की मूल वाणी भी पहली बार अभी प्रकाशित हुई।[12] जिसकी टीका व अनुवाद का कार्य तो अभी शेष है। इतिहासकारों व आलोचकों के प्रमुख व गौण के दृष्टिकोण व पिष्ट-पेषण की प्रवृत्ति का भी यह साहित्य शिकार हुआ है।

जांभाणी साहित्य को यदि हम मूल्यांकन की दृष्टि से देखे तो यह भक्ति साहित्य की आत्मा प्रतीत होता है। भक्ति आन्दोलन का सम्पूर्ण चरित्र इसमें व्याप्त है। विभिन्न धर्मों, जातियों व वर्गों से आये कवि यहां आकर एकमेक हो गये हैं। इस साहित्य का एक-2 शब्द ईश्वर भक्ति, सदाचार व नैतिक उत्थान को समर्पित है। निर्गुण व सगुण का अद्‌भुत समन्वय इसकी निजि विशेषता है। भारतीय संस्कृति और सनातन मूल्यों का इसे आख्यान कहा जा सकता है। पौराणिक व ऐतिहासिक तत्वों का सहज निर्वाह इस साहित्य की निराली विशेषता है। भगवान विष्णु की भक्ति इन्हें अत्यन्त प्रिय है परन्तु विरोध किसी का नहीं। भक्ति में पाखण्ड असह्य है तो विनय व समर्पण अनिवार्य है। भक्ति में डूबी यह काव्यधारा लोक से कतई विमुख नही हैं। आमजन की इच्छा, आकांक्षा, अपेक्षा, सुख और दु:ख के साथ-साथ युगीन परिवेश की जीवन्त झलक इस साहित्य में है। विभिन्न काव्यरूपों, काव्य तत्वों व भाषा और भाव भंगिमा की दृष्टि से यह साहित्य विलक्षण है और स्वतन्त्र शोध का अधिकारी है।

जाम्भाणी साहित्य गुण व परिमाण दोनों ही दृष्टियों से अत्यन्त समृद्ध है। जांभाणी साहित्य धारा की एक बहुत बड़ी विशेषता है, जिसकी ओर विद्वानों का ध्यान कम जाता है, यह धारा हवा के साथ बहने वाली नहीं है। हिन्दी साहित्य में जिस समय रीतिकाल की धूम हो गई थी और भक्तिधारा को कुंद मान लिया गया था, उस समय भी जांभाणी काव्यधारा अपने उन्हीं कगारों में पूरे वेग के साथ बहती रही, जो गुरु जाम्भोजी उसके लिए बनाकर गये थे। जिस रीतिकाल में कवियों ने अपनी कलमें दरबारों में जाकर बेच दी थी और थैलियों में खनकते सिक्कों की आवाज उनके लिए कभी तलवारों की टनक तो कभी पायलों की खनक बन जाती थी, उस विषम समय में भी जांभाणी कवि सुदूर रेतीले धोरों के बीच झोंपड़ियों में पेट बांधे भगवान के गीत लिख रहे थे। जब इनके अवदान का मूल्यांकन होगा तो रीतिकाल पर भी पुनर्विचार करना पड़ेगा। आज भी जांभाणी साहित्यकार उन्ही मूल सिद्धान्तों पर अडिग है, जिनको लेकर भक्ति आंदोलन आगे बढ़ा था।

सार रूप में यही कहा जा सकता है कि जांभाणी साहित्य उस महान भक्ति आन्दोलन व साहित्य का अभिन्न अंग है, जिसने भारतीय जनमानस को आन्दोलन किया था। जांभाणी साहित्य के मूल्यांकन व चर्चा के बिना भक्ति आंदोलन व साहित्य की चर्चा एकांगी ही कही जायेगी।

सन्दर्भ-

1. उद्धृत -शिव कुमार मिश्र, भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य, पृ. 30
2. रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 61
3. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य: उद्‌भव और विकास, पृ. 55
4. डॉ. राजमल बोरा, भारतीय भक्ति साहित्य, पृ. 14
5. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य की भूमिका, पृ. 57
6. डॉ. राजमल बोरा, भारतीय भक्ति साहित्य, पृ. 86
7. वही- पृ. 89
8. (संपा.) कुंवरपाल सिंह, भक्ति आन्दोलन इतिहास और संस्कृति, पृ. 118
9. रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 65
10. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य, प्रथम भाग, पृ. 17
11. दृष्टव्य - (संपा.) कृष्णानन्द आचार्य, पोथो ग्रंथ ज्ञान - डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य, दूसरा भाग
12. दृष्टव्य-(संपा.) कृष्णानन्द आचार्य, पोथो ग्रंथ ज्ञान, प्रकाशक-जांभाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर, 2013

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

दयानंद महाविद्यालय, हिसार, हरियाणा

गुरु जाम्भोजी की वाणी में मानवतावादी दृष्टि

15वीं शताब्दी में जब मानवता कई प्रकार के दु:खों, कष्टों, अंधविश्वासों, पाखण्डों, अत्याचारों दुविधा इत्यादि से पीड़ित थी। राजस्थान में भी एक तरफ अकाल से मनुष्य व पशु पक्षी पीड़ित थे, तो दूसरी ओर निरंकुश शासकों व अधिकारियों से त्रस्त थे, धर्म गुरुओं द्वारा फैलाये गए पाखण्डों व कर्मकाण्डों से शोषित थे। इस दुविधा व कष्ट की घड़ी में मानव का ईश्वर, प्रकृति व मानवता से ही विश्वास उठ चुका था। इसलिए हिंसा, चोरी, लूट खसोट, धर्मान्तरण, घृणा, द्वेष, अविश्वास, आम बात हो चुकी थी। भोले-भाले किसान सबसे ज्यादा संकट में थे। गुरु नानक जी ने पंजाब में सच्चे धर्म की अलख जगाई तथा सिक्ख धर्म की स्थापना की वहीं राजस्थान में उसी समय सन् 1484-85 के भयंकर अकाल में जब लोग अपने घर-बार छोड़कर पशुओं को साथ लेकर मालवा, गुजरात की तरफ पलायन कर रहे थे। ऐसे समय में गुरु जाम्भोजी ने उन्हें अकाल में सहायता कर राहत प्रदान की और उनके दु:ख स्थाई रूप से दूर करने के लिए मानवता की राह दिखाते हुए शिरोमणि बिश्नोई पंथ की स्थापना की।

यह पंथ किसी जाति या धर्म विशेष के लिए नहीं था बल्कि पूरी मानवता के लिए था। गुरु जाम्भोजी ने प्रकृति की गोद व थार मरूस्थल में मनुष्य, पशु-पक्षी, पेड़- पौधों के बीच में रहकर इनके और प्रकृति के साथ सम्बन्ध एवं लोगों के दु:ख-दर्द एवं जरूरतों को समझा। भीषण अकालों के कारणों को जाना व उपाय बताये। गुरु जाम्भोजी द्वारा बताये 29 नियम एवं सबदवाणी में शामिल उनकी शिक्षाएं पूरी मानवता के लिए उपयोगी है। वो आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी 530 वर्ष पूर्व थी, बल्कि आज उनकी ज्यादा जरूरत है। अगर उनकी शिक्षाओं पर चला जाये तो आज के समय की मानवता की व विश्व की हर समस्या का समाधान मौजूद है। ये आपसी प्रेम, भाईचारा, शांति के सन्देश देती है।

गुरु जाम्भोजी ने जात-पात, ऊँच-नीच व जन्म के भेदभाव व दिखावे को त्यागकर कर्म के सिद्धान्त पर बल दिया। उन्होंने जीने की ऐसी युक्ति (आर्ट ऑफ लिविंग) बताई जिस पर चल कर कोई भी मनुष्य सफल जीवन व्यतीत कर सकता है और मरने के बाद मोक्ष की प्राप्त कर सकता है। गुरु जाम्भोजी जी वाणी को पांचवा वेद माना जाता है क्योंकि इसमें सभी वेदों, उपनिषदों, पुराणों, धर्म ग्रंथों का सार है। ऐसे समन्वयवादी गुरु व पंथ विरले ही है। गुरु जाम्भोजी की शिक्षाओं व बिश्नोइज्म के सिद्धान्तों को अगर कुछ श्रेणियों में बांटा जाए तो वो इस प्रकार है :-

1. **स्वास्थ्य व शुद्धता के लिए :** 30 दिन सूतक, 5 दिन रजस्वला, सुबह स्नान करना, नशे (अमल, तम्बाकू, भांग, शराब) का सेवन नहीं करना, शाकाहारी भोजन करना, साफ एवं छानने बाद पानी पीना, आत्मशुद्धि एवं पाचनशक्ति को मजबूती के लिए उपवास रखना, साफ व श्वेत वस्त्र पहनना, योग व प्राणायाम करना, कम भोजन खाना, जल्दी सोना व जल्दी उठना आदि।
2. **प्रकृति (वन व वन्य पशु) व पर्यावरण सरंक्षण के लिए :** जीवों पर दया करना, हरे वृक्ष नहीं काटना, हवन/यज्ञ करना, ईंधन के साथ जीवों को नहीं जलाना, जल का सरंक्षण करना, नदि-नालों व घाटों को साफ रखना, प्रकृति से प्रेम, वर्षा के पानी को संचित करना आदि।
3. **सुखी व सफल जीवन व खुशी के लिए :** संतोष रखना, क्षमा करना, दया करना, फालतू वाद विवाद नहीं करना, क्रोध नहीं करना, काम को वश में रखना, लालच नहीं करना, झगड़ा नहीं करना, दुविधा में नहीं रहना, सहज जीवन जीना, मेहनत और हक की कमाई से अच्छी खेती करना, सही रास्ते पर चलना, सही ढंग से रहना, अपनी सकारात्मक ऊर्जा को बर्बाद नहीं करना, ज्ञान अर्जित करना, निरन्तर प्रयास करते रहना व अनुभव से विशेषता प्राप्त करना, उद्देश्य को ध्यान में रखकर कार्य करना, विधिवत तरीके से जीना, , जागते रहो (सावधान या सचेत रहो), संयम रखना, हर्षित रहना, मीठे वचन बोलना, परिवर्तन के नियम को मानना, अपनी रक्षा के इंतजाम करना, नम्रता का पालन करना, मनहठी नहीं बनना, अपने रहने व कार्य

क्षेत्र को साफ रखना आदि।

4. **नैतिक मूल्यों व नैतिक जीवन के लिए :** शील (चरित्र एवं निश्चय रखना) पालन करना, चोरी नहीं करनी, निंदा नहीं करना, झूठ नहीं बोलना, घमण्ड नहीं करना, अपने हक की कमाई खाना, स्त्री पुरुष को बराबर के अधिकार एवं समान समझना, मर्यादा में रहना, अच्छी संगति में रहना, अपनी कथनी व करनी को एक रखना, पहले खुद करके दिखाना तब दूसरों को उपदेश देना, सुपात्र को दान करना, सिर्फ ग्रंथों को पढ़कर ही घमण्ड नहीं करना बल्कि उन पर अमल भी करना, सत्कर्म करना, परमार्थ व लोक कल्याण के कार्य करना, धोखा नहीं देना, गरीबों की मदद करना, मन में मेल नहीं रखना, पाप नहीं करना, पाखण्डी लोगों से सावधान रहना, वचन का पक्का होना, मर्यादा में रहना, प्रकाश की तरफ चलना आदि।

5. **आध्यात्मिक जीवन के लिए :** दोनों समय विष्णु का जप-ध्यान करना, मोह नहीं रखना, प्राणायाम व योग करना, पाखण्डों को नहीं मानना, मूल (निराकार विष्णु) की आराधना करना, पहले खुद करिये फिर दूसरों को समझाइये का पालन करते हुए गुरु जाम्भोजी ने तालाबों का निर्माण किया, पेड़ लगवाये, बाँधों का उद्घाटन किया, गरीब व पीड़ितों की सहायता की। गुरु जाम्भोजी सम्पूर्ण विश्व को अपना मानते थे और प्राणी मात्र से प्यार करते थे और सभी को सुखी जीवन यापन करते देखना चाहते थे। गुरु जाम्भोजी ने कहा था कि धरती मेरे ध्यान में है व वनस्पति में मेरा निवास है। गुरु जाम्भोजी की पर्यावरण सरंक्षण की शिक्षाओं पर चलते हुए सैंकड़ों बिश्नोइयों ने पेड़ों व वन्य जीवों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। यह बलिदान सदियों से आज तक जारी है। अगर हम गुरु जाम्भोजी की शिक्षाओं पर चलें तो सिर्फ हमारा ही नहीं पूरी मानवता का भला हो सकता है। हम सबका फर्ज बनता है कि गुरु जाम्भोजी की सम्पूर्ण मानवता के भले के लिए दी गई शिक्षाएँ हम स्वयं भी पालन करें व हर एक माध्यम का इस्तेमाल कर पुरे विश्व में फैलाएं ताकि पूरी मानवता व विश्व का कल्याण हो।

– **आर.के. बिश्नोई,** दिल्ली

जीवन

ना उदास हो तू जीवन कि इस राह में,
देख इन पंछियों को आकाश कि गहराइयों में,
है जिन्दगी पनप रही हर ओर,
अपने मन कि आँखं जरा खोल,
जीना है यहाँ तो हर फिक्र को तू भूल जा,
अगर बंद हो जाये हर दरवाजा तो,
याद कर लेना उस खुदा को,
तेरे ही पीछे खड़ा है तेरा हाथ थामने को,
अपनी खुशियों के दामन को तू थोड़ा ओर बढ़ा,
क्या करेगा बस गम समेट कर यहाँ,
रख हिम्मत, मत मान आसानी से हार,
तू ही तेरा कर्ता, मत हो इस तरह से परेशान,
जिन्दगी है छोटी सी, रेत कि तरह है फिसल रही,
मत कर इसे और छोटा तू डूबकर तन्हाइयों में कहीं,
सीख जीने की कला को और जीवन कुछ भी नहीं,
कौन जीता कौन हारा किसको है ये याद कहीं,
छोड़ दे अब भागना हर एक पल के पीछे,
सीख ले रुक-रुक के चलना थोड़ा नजारों को भी जी ले,
डूब जा किसी नशे में यहाँ फिर उसे घूंट-घूंट करके पी ले,
आगे का क्या सोचना अब जो पल है इसमें तो जी ले,
ऐसे ही वक्त जायेगा निकल मौत करीब आएगी तेरे,
तब कहना उस से जिंदगी तो जी ली मैंने,
अब बता तेरी पोटली में मेरे लिए है क्या,
मुस्कुराते जी ले जीवन से मौत तक का सफर,
रख खुदा की लाज थोड़ी तो जरा,
जीवन है मिला उससे इतना भी न हो गुमराह!

❐ **किरण बिश्नोई,** कुरुक्षेत्र

गुरु जांभोजी की वाणी: वैश्विक परिदृश्य एवं उपादेयता

(6 नवम्बर, 2016 को पंजाब विश्वविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में दिए गये बीज भाषण के मुख्य बिन्दु)

1. विश्व में अवतारों की परम्परा प्राचीनकाल से प्रचलित है । भारत में सर्वाधिक अवतार हुए हैं। विश्व के सर्वप्रथम लिखित दस्तावेज और मानवता की धरोहर 'ऋग्वेद' में अवतार का उल्लेख इस प्रकार है। 'रूपम् रूपम् प्रतिरूपों बभूव।' विष्णु भगवान के अनेक अवतार माने जाते हैं। अवतारों की इसी परम्परा में गुरु जांभोजी का अवतार जन्माष्टमी के पावन अवसर पर हुआ। वे स्वयं शब्दवाणी जंभसागर में कहते हैं- भुयं नागौरी म्हैं ऊंडे नीरे अवतार लियो। उन्होंने नृसिंहावतार के अवसर पर भक्त प्रह्लाद को यह वचन भी दिया था-प्रहलादा सूं वाचा कीवी आयो बारह काजै' कि मैं कलियुग में अवतार लेकर करोड़ों जीवों का उद्धार करूंगा। सतयुग में भक्त प्रह्लाद ने, त्रेतायुग में सत्यवादी राजा हरिशचन्द्र ने, द्वापर में धर्मराज युधिष्ठिर ने और कलियुग में गुरु जांभोजी ने करोड़ों जीवों का उद्धार किया।
2. मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन की धारा को प्रभावशाली बनाने के लिए गुरु जांभोजी के तेजस्वी व्यक्तित्त्व का महत्त्वपूर्ण योगदान है। उनके अलौकिक जीवन चरित की लीलाएं क्रमबद्ध रूप से चित्रित हैं और प्रामाणिक हैं। सात वर्ष तक मौन रहने के बाद उनके मुखारविन्द से गुरु चिह्नों गुरु चिह्न पुरोहित, गुरुमुख धर्म बखांणी की ज्ञानधारा फूट पड़ी। भारतीय धर्म और संस्कृति के पालन हेतु गोपालन और गोरक्षा के लिए उन्होंने 27 वर्षों तक गऊएं चराई। उन्होंने जीव कल्याण (जीव दया पालणी) के लिए 29 धर्म नियमों पर आधारित सम्वत् 1542 में बिश्नोई पंथ का प्रवर्त्तन किया।
3. मध्यकाल में भारतीय समाज अंधविश्वासों और कुरीतियों से ग्रस्त था। गुरु जांभोजी ने परम्परागत सनातन वैदिक धर्म को पुनर्जीवित किया।
4. गुरु जांभोजी ने हिन्दुओं, मुसलमानों, बादशाहों और नवाबों में साम्प्रदायिक सौहार्द स्थापित किया। इसके लिए उन्होंने कहीं भी हिंसा का सहारा नहीं लिया और अपने ब्रह्मतेज से ही सबको प्रभावित किया। उन्होंने सर्वधर्म समभाव का प्रचार और प्रसार किया तथा इस्लाम धर्म के प्रवर्त्तक पैगम्बर मोहम्मद की प्रशंसा करके उनके असली रूप को मुसलमानों के सामने प्रकट किया। इससे स्पष्ट होता है कि गुरु जांभोजी का व्यक्तित्त्व सार्वभौम और सार्वकालिक (एटरनल कोस्मोपोलिटन) था।
5. गुरु जांभोजी ने आज से लगभग 500 वर्षों पूर्व अपनी दिव्य वाणी द्वारा यह सनातन संदेश दिया था कि प्रकृति की रक्षा करो और पर्यावरण बचाओ। वृक्ष ही धरती के शृंगार, जीवनदाता और पक्षियों के रैन बसेरे हैं। गुरु महाराज खुले आकाश के नीचे रहते थे। उनका कथन है- हरी कंकहेड़ी मंडप मैड़ी, जहां हमारा बासा। यह उनका वैज्ञानिक चिन्तन था, जिसके आचरण की आज विश्वव्यापी समस्या पर्यावरण-प्रदूषण के निवारण के लिए नितांत आवश्यकता है। उन्होंने पर्यावरण के लिए यज्ञ पर विशेष बल दिया।
6. गुरु जांभोजी समन्वय के साकार स्वरूप थे। उन्होंने सम्प्रदाय, जाति, ऊंच-नीच शिक्षित-अशिक्षित, धनी-निर्धन अंधविश्वासों और पाखण्डों से (अड़सठ तीरथ हिरदा भीतर, बाहर लोका-चारुं) नाथों, योगियों, साधु- संतो के लिए सन्मार्ग का पथ प्रशस्त एवं ज्ञानोन्मुख करके उनका उद्धार किया, जिनमें दलित-पीड़ित मोती मेघवाल,

लालचंद नाई, आसनोजी भाट, कान्होजी चारण, रायचंद सुथार, जोधोजी रायक और हासिम-कासिम को जेल से मुक्त कराकर इन सभी की रक्षा की। उनकी वाणी जन्मना नहीं कर्मणा प्रधान है। इस संदर्भ में जाम्भोजी का कथन है- उत्तम कुली का उत्तम न होयबा, कारण किरिया सारुं।

7. गुरु जांभोजी की शब्दवाणी जंभसागर मरूभूमि भाषा में विरचित छन्दोबद्ध न होकर प्रवाहमयी और गेय है, जो आज तक उसी स्वर में जनता का कंठहार बनी हुई है।

8. गुरु जांभोजी की वाणी वेदों की तरह श्रुत परम्परा और वाचिक परंपरा में समाज में सुरक्षित रही है और कालांतर में उसका प्रकाशन हुआ, जिसमें 120 सबद हैं। इन 120 सबदों में गुरु जांभोजी के ज्ञान, भक्ति और कर्म की धारा प्रवाहित हुई है। उन्होंने कहा भी है- मोरा उपाख्यान वेदूं, कण तत भेदूं। अर्थात् मेरा उपाख्यान वेद के वचन है, जो कण तत्त्व का भेद बताने वाला है। उनकी वाणी का सनातन संदेश है- जीया नै जुगती अर मूवां नै मुगती।

9. राव जोधाजी को भी मीराबाई के दादा दूदाजी और उनका परिवार गुरु जांभोजी की शिष्य मंडली में था। मीराबाई को कृष्ण भक्ति की प्रेरणा गुरु महाराज से ही प्राप्त हुई थी। यह शोध का एक प्रामाणिक तथ्य है क्योंकि मीरा ने अपनी वाणी में जोगिड़ा शब्द का प्रयोग किया है, वे योगीराज जांभोजी महाराज हैं।

10. आज इसकी परम आवश्यकता है कि गुरु जांभोजी सबदवाणी का देश-विदेश की भाषाओं में अनुवाद होना चाहिए और विभिन्न शिक्षा संस्थानों में उनकी वाणी पाठ्यक्रम में निर्धारित करना आवश्यक है।

11. गुरु जांभोजी ने 29 धर्म-नियमों का केवल सिद्धान्त रूप में ही वर्णन नहीं किया बल्कि उनके व्यावहारिक आचरण के लिए अपने अनुयायियों की एक सेना (फौज) भी तैयार की। गुरु महाराज की कथनी और करनी एक समान है- पहले किरिया आप कमाइये, तो औरा न फरमाइये।

12. सम्पूर्ण जांभाणी साहित्य में शोध की अनेक सम्भावनाएं है। देश के कई विश्वविद्यालयों में जांभाणी साहित्य पर शोधकार्य हो चुका है और निरन्तर जारी है।

13. विश्व के इतिहास में खेजड़ली कांड जोधपुर का गुरु जांभोजी के अनुयायियों का एक ऐसे महाबलिदान के रूप में ज्वलंत उदाहरण है, जिसमें 363 नर-नारियों (बिश्नोइयों) ने वृक्षों की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे इसीलिए गुरु जांभोजी विश्व के प्रथम एनवायरनमैन्टलिस्ट (पर्यावरणविद्) हैं, जिन्होंने पर्यावरण-संरक्षण को वैश्विक फलक प्रदान किया है।

14. गुरु जांभोजी के 29 धर्म-नियमों के अनुपालन की वर्तमान परिस्थितियों में महती आवश्यकता है। ये धर्म-नियम मानव जीवन की आचार-संहिता (मोरल कोड ऑफ कंडक्ट) हैं। आज के वैश्विक परिदृश्य में बाजारवाद, भौतिकवाद, वैश्वीकरण, मानव मूल्यों का अवमूल्यन, सांस्कृतिक-प्राकृतिक प्रदूषण और नशाखोरी का बोलबाला है। इस परिदृश्य में गुरु जांभोजी की वाणी की उपादेयता दिग्भ्रमित मानवता के लिए प्रासंगिक और प्रकाश- स्तम्भ (बिकनलाइट) है क्योंकि यह वाणी सर्वधर्म समभाव, विश्वमंगल की कामना, प्रकृति- संरक्षण, समन्वय और मानवतावादी चिन्तन से ओतप्रोत है।

-डॉ. बाबूराम (डी.लिट्.)
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
मो.: 093158-44906
ई-मेल: drbabuji1958@gmail.com

पर्यावरण संरक्षण और बिश्नोई पंथ

पर्यावरण शब्द विस्तृत अर्थ वाला शब्द है। इसकी व्यापकता का घेरा काफी विशाल है। इसलिये इसके अर्थ को शब्दों की सीमा में बाँधना एक दुरूह कार्य है। सामान्यत: हम सम्पूर्ण पर्यावरण को दो श्रेणियों में रखते हैं- (क) सामाजिक पर्यावरण, (ख) भौगोलिक पर्यावरण। सामाजिक पर्यावरण वह है जो व्यक्ति द्वारा नियन्त्रित होता है। भौगोलिक पर्यावरण वह है जिस पर व्यक्ति नियन्त्रण नहीं कर पाता है। इसे प्राकृतिक पर्यावरण की संज्ञा दी जाती है। इसे स्पष्ट करते हुए मैकाईवर और पेज लिखते हैं, 'पृथ्वी का धरातल, उसकी सब प्रकार की प्राकृतिक दशाएं, प्राकृतिक उत्पादन के साधन, भूमि, जल, पर्वत, मैदान, खनिज पदार्थ, पौधे, जलवायु और विश्व की वे सभी शक्तियाँ जो पृथ्वी और मानव को प्रभावित करती है, भौगोलिक पर्यावरण के अर्न्तगत आती हैं।' (मैकाइवर और पेज, 1949: 98)

सामान्यत: पर्यावरण उसे कहा जा सकता है जिसमें जीव और प्रकृति निवास करते हैं और जिनमें परस्पर क्रियायें व अन्त:क्रियाएं होती रहती हैं।

सामान्य भाषा में पर्यावरण, परिस्थिति या आवरण शब्दों का प्रयोग हम समान अर्थों में करते हैं। किन्तु समाजशास्त्र के अर्न्तगत पर्यावरण शब्द का विशेष अर्थ है जिसकी व्यापकता का ज्ञान परिस्थिति या वातावरण शब्द से नहीं हो सकता। पर्यावरण उस सबको कहते हैं, जो किसी वस्तु को निकट से घेरे है तथा उसे प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। पशु-पक्षी, पेड़-पौधे आदि सभी चेतन वस्तुओं के लिए उपयुक्त तथा अनुकूल पर्यावरण की आवश्यकता होती है। इसके अभाव में जीवों तथा वनस्पतियों को अपना अस्तित्व बनाये रखना कठिन हो जाता है।

प्राकृतिक या भौगोलिक पर्यावरण के संरक्षण में भारतीय संस्कृति का अनूठा योगदान रहा है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक भारत तक नज़र डालें तो हमारी संस्कृति की अनेक विशेषताएँ सामने आती हैं। हमारी संस्कृति का मूलमंत्र अहिंसा 'परमोधर्म' कहा जा सकता है। अहिंसा ही पर्यावरण संरक्षण का मूल है। भारतीय संस्कृति प्रतीकों के रूप में गाय, बैल, चूहे, उल्लू, गरुड़, पीपल, खेजड़ी, तुलसी, बरगद आदि के प्रति आस्था व श्रद्धा पर्यावरण संरक्षण के हेतु ही हैं। (अग्रवाल, जुलाई-2014 : 14)

बिश्नोई पंथ का उद्‌भव

पर्यावरण संरक्षण की उच्चतम भावनाओं से ओत-प्रोत एक पंथ का उद्‌भव 15वीं शताब्दी में राजस्थान में हुआ जो बिश्नोई नाम से प्रचलित है। बिश्नोई पंथ के प्रवर्तक गुरु जम्भेश्वर का जन्म हिन्दू कैलेन्डर के अनुसार विक्रमी सम्वत् 1508 भाद्रपद कृष्ण पक्ष अष्टमी को राजस्थान के नागौर जिले में पीपासर नामक गांव में हुआ। जब वे 34 वर्ष के थे, तो उनके गांव में भयानक सूखा पड़ा। (बिश्नोई, 2000: 21) लगातार तीन वर्षों के भीषण सूखे की चपेट में आकर घास-फूस नष्ट हो गये थे। ऐसी स्थिति में जानवरों को चराने की मजबूरी में लोगों ने पेड़ काटने आरम्भ कर दिये। लोग भोजन तथा पानी और पशु-धन चारे-पानी के अभाव में मरने लगे। लोग पानी की तलाश में घर-बार छोड़कर जाने लगे। गांव के गांव खाली होने लगे।

इस भयानक परिस्थिति में गुरु जम्भेश्वरजी ने आत्म-चिन्तन किया और अनुभव किया कि जिस समय भूमि पर पेड़-पौधों की अधिकता थी, तब भूमि में अकाल सहन करने की क्षमता अपेक्षाकृत अधिक थी। परन्तु पेड़-पौधों के काटने के फलस्वरूप ही आज लोग असहाय अवस्था में इधर-उधर भटकने पर विवश हुए हैं। अत: यदि मनुष्य जाति को बचाना है तो पर्यावरण का महत्व समझाना होगा और जीवन के अस्तित्व हेतु अपनी जीवन-शैली को प्रकृति के अनुरूप ढ़ालना होगा। गुरु जम्भेश्वर ने 29 नियमों के रूप में आचार-संहिता बनाई। उस समय जिन लोगों ने ये नियम माने और गुरु जम्भेश्वर में आस्था रखी, उन लोगों को 'पाहल' पिला कर पंथ में शामिल कर लिया गया और वे बिश्नोई कहलाये। (बिश्नोई, 2000: 59)

बिश्नोई पंथ के पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित नियमों की प्रासंगिकता

बिश्नोई समुदाय में 29 नियमों का बहुत महत्व है।

पंथ के प्रारम्भिक काल से लेकर आज तक इन नियमों का पालन बड़ी दृढ़ता से किया जा रहा है। अहिंसा, पवित्रता, सदाचार एवं उपासना से सम्बन्धित ये नियम न केवल बिश्नोई समुदाय के लिये महत्वपूर्ण हैं अपितु सम्पूर्ण मानव-जाति के लिये कल्याणकारी हैं।

इस समुदाय के लोगों ने अपने गुरु के पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित बताये नियमों की पालना हेतु अनेक बार शहादत दी है। बिश्नोई पंथ ने पर्यावरण की सुरक्षा हेतु जाम्भोजी द्वारा प्रज्ज्वलित यज्ञ में अपने प्राणों रूपी आहुति देकर निरन्तर प्रकाशवान रखा है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण विश्व प्रसिद्ध खेजड़ली बलिदान की घटना है। विक्रमी सम्वत् 1787 की भाद्रपद दशमी तक जोधपुर के निकटवर्ती गांव खेजड़ली में वृक्षों की रक्षा करते हुये 363 बिश्नोई स्त्री-पुरुषों ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। आज भी यह घटना विश्व पटल पर पेड़ों को बचाने हेतु बलिदान होने की सबसे बड़ी घटना है। (बिश्नोई, 2000:252)

अमृता देवी बिश्नोई के नेतृत्व में हुई यह घटना आज भी पर्यावरण प्रेमियों की प्रेरणा को द्विगुणित करती है। यह समुदाय आज भी वृक्षों तथा जीव-जन्तुओं की रक्षा उसी जोश व जुनून के साथ करता है, जैसा पंथ की स्थापना के समय था। यही कारण है कि आज बिश्नोई गांव हरे-भरे हैं और वहां पर स्वच्छन्दता से विचरण करने वाले जीवों को देखकर बिश्नोई बाहुल्य गांव की पहचान स्वयं हो जाती है। बढ़ती जनसंख्या और घटते वनों के कारण वन्य जीवों की अनेक नस्लें धीरे-धीरे खत्म हो रही हैं। परन्तु बिश्नोई बाहुल्य गांव के क्षेत्र में ये जीव काफी मात्रा में है।

गुरु जम्भेश्वर एवं पर्यावरण संरक्षण

पर्यावरण असन्तुलन, वन्य जीवों की घटती संख्या तथा 'ग्लोबल वार्मिंग' जैसी ज्वलंत समस्याओं का निराकरण सम्पूर्ण विश्व के वैज्ञानिक एवं पर्यावरण प्रेमी आज वही बता रहे है जो जम्भेश्वर ने 'सब्दवाणी' में आज से पाँच सौ वर्ष पूर्व ही बता दिये थे। (बिश्नोई, जून-2014:18)

गुरु जम्भेश्वर ने अपने अनुयायियों को हरे पेड़ ना काटने तथा जीव-जन्तुओं की रक्षा करने को कहा था। इसलिए बिश्नोई पंथ के लोग न तो स्वयं जीव हत्या करते हैं तथा ना ही हरे पेड़ों को काटते हैं। इसके साथ-साथ बिश्नोई पंथ के लोग अन्य लोगों को भी जीव हत्या ना करने तथा पेड़ों को काटने से रोकते हैं। अगर फिर भी कोई ऐसा करता है तो गुरु जम्भेश्वर के अनुयायी अपने प्राणों की परवाह ना करते हुए संघर्ष करते हैं। ऐसे उदाहरण अन्य समुदाय या पंथ में नहीं मिलते हें।

आज भी हिमालय घाटी में वृक्षों को बचाने के लिए चल रहे चिपको आन्दोलन की शुरूआत सम्भवत: 'खेजड़ली बलिदान की घटना से प्रेरित हैं। 1973 में जब हिमालय से वृक्षों को काटा जा रहा था। तब स्थानीय ग्रामीणों ने कटाई को रोकने के लिए बिश्नोई समुदाय द्वारा अपनाये गये मार्ग का अनुसरण किया। महान् पर्यावरणविद् श्री सुन्दर लाल बहुगुणा के नेतृत्व में शुरू किये गये इस आन्दोलन से खेजड़ली बलिदान तथा बिश्नोई समुदाय के प्रकृति-प्रेम का काफी प्रचार-प्रसार हुआ है।

हिमालय के चिपको आन्दोलन की प्रेरणा से दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य में 'अप्पिको आन्दोलन' प्रारम्भ हुआ था। कन्नड़ भाषा में अप्पिकों का अर्थ होता है - आलिंगन करो। घटना के अनुसार अगस्त 1982 में कर्नाटक के शिरसि जिले के साल्कणे गांव में लगभग 150 युवक व युवतियाँ वनों को कटने से बचाने के लिये पेड़ों से चिपक कर खड़े हो गए थे। मजबूरीवश ठेकेदारों का वनों की कटाई रोकनी पड़ी तथा राज्य सरकार को भी वन नीति में संशोधन करना पड़ा (सिंह और सिंह, 2013 :282-83)

निष्कर्ष

पर्यावरण संरक्षण हेतु बिश्नोई बलिदानियों की परम्परा बहुत प्राचीन है तथा आज भी अबाध गति से चलायमान है। विगत वर्षों में वन्य जीवों को बचाने हेतु शहीद होने वालों में अक्तूबर 1996 में सांवतसर (बीकानेर) के श्री निहाल चन्द धारणीयाँ, अगस्त 2000 में गाँव एकलखोरी (जोधपुर) निवासी गंगाराम ईशरवाल, तथा जनवरी 2014 में गांव ननेऊ तहसील फलौदी, जिला जोधपुर निवासी शैतान सिंह भादू का नाम आता है। निहाल चन्द तथा गंगाराम ईशरवाल को तो भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा मरणोपरांत शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया था। वन्य जीवों तथा हरे पेड़ों को

बचाने के लिये जो योगदान व बलिदान बिश्नोई पंथ कर रहा है, वैसा उदाहरण विश्व में और कहीं नहीं मिलता।

21वीं सदी की ज्वलंत समस्याओं में से एक अत्यन्त महत्वपूर्ण व मानव जाति के अस्तित्व से जुड़ी समस्या पर्यावरण संरक्षण की है। गुरु जम्भेश्वर के पर्यावरण सम्बन्धी नियमों को अपनाकर सम्पूर्ण मानव जाति अपनी रक्षा व कल्याण कर सकती है। ये सिद्धान्त सारे विश्व के लिये अपनाने योग्य हैं।

सन्दर्भ-सूची

1. मैकाईवर और पेज, सोसायटी, (1949), मैकमिलन कम्पनी, लन्दन।
2. अग्रवाल, राजाराम, अमर ज्योति पत्रिका, श्री बिश्नोई मन्दिर प्रकाशन, हिसार, (जुलाई 2014)।
3. बिश्नोई, कृष्ण लाल, गुरु जाम्भोजी एवं बिश्नोई पंथ का इतिहास, (2000), समराथल प्रकाशन, अबुबशहर (सिरसा), हरियाणा।
4. वही।
5. वही।
6. बिश्नोई, पुष्पा, बिश्नोई पंथ में पर्यावरण चेतना, अमर ज्योति पत्रिका, श्री बिश्नोई मन्दिर प्रकाशन, हिसार (जून 2014)
7. सिंह, वी.एन., सिंह जनमेजय (2013), भारत में सामाजिक आन्दोलन, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

-राधेश्याम, सतेन्द्र सिंह एवं अतुल कुमार

शोधार्थी

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक।

email : bishnoiradhey100@gmail.com

योग को जानो और अपने आप को पहचानो

योग व्यायाम पद्धति संसार की एक आदर्श व्यायाम पद्धति है। उसका उपयोग बाल, युवा, वृद्ध, स्त्री, पुरुष, गरीब, अमीर सभी लोग सभी ऋतुओं में कर सकते हैं। योग करने व सीखने में कोई मुश्किल नहीं होती है। योग द्वारा सारे शरीर को अच्छा व्यायाम प्राप्त होता है। योग भारतीय विद्वान महर्षि पतंजलि की एक बहुमूल्य देन है। महर्षि पतंजलि योग के पितामह कहे जाते हैं।

योग शब्द संस्कृत के 'युज' धातु से बना है जिसका अर्थ है जोड़ना व मिलाना। योग शरीर और मन को स्वस्थ रखता है। रोगों का शमन हो जाता है। योग के आठ अंग हैं- 1) यम, 2) नियम, 3) आसन, 4) प्राणायाम, 5) प्रत्याहार, 6) धारणा, 7) ध्यान, 8) समाधि। योग शारीरिक, मानसिक अथवा आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभप्रद है।

21 जून को 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' के रूप में पूरे संसार (विश्वभर) में मनाया गया। विश्व के 192 देशों में हुए कार्यक्रमों में 2 अरब लोगों ने योगासन का अभ्यास किया। दिल्ली के राजपथ पर 35,985 लोगों ने प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी के साथ और करनाल की धरती पर हरियाणा के मुख्यमंत्री के साथ 30 हजार से अधिक लोग योग दिवस के कार्यक्रमों में भाग लेकर इतिहास के साक्षी बन गये। दिल्ली में आयोजित विश्व योग सम्मेलन में 152 देशों को आमन्त्रित किया गया। विश्व योग सम्मेलन में 36 मुस्लिम देशों के प्रतिनिधि भी शामिल हुए।

योग भारत की पहचान है। भारत के ऋषि मुनियों ने जन-कल्याण के लिए योग के विभिन्न आयामों की स्थापना की ताकि समाज स्वस्थ रह सके।

योग अभ्यास करने पर उससे होने वाले लाभों को नकारा नहीं जा सकता है क्योंकि यह सार्वभौमिक सत्य है कि उचित प्रकार से किए गए योग, व्यायाम से स्वास्थ्य एवं क्षमता का सम्पूर्ण लाभ प्राप्त होता है। उत्तम स्वास्थ्य किसी भी व्यक्ति की सबसे बड़ी सम्पदा है। इस स्वास्थ्य संपदा को बनाये रखने और विकास के लिए यौगिक अभ्यास अचूक साधन है। योग के अभ्यास से व्यक्ति दीर्घायु को प्राप्त कर सकता है।

यौगिक क्रियाओं द्वारा मनुष्य की सुप्त आंतरिक शक्तियों का विकास होता है। भारतीय संस्कृति में वर्णित चारों पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, योग, मोक्ष, योग प्रणायाम द्वारा प्राप्त किए जा सकते हैं। योग व्यष्टि और समष्टि दोनों को ही गरिमा प्रदान करने वाला है क्योंकि योग भारतीय संस्कृति की पुरातन थाती है।

अत: ठीक ही कहा गया है- 'योग को जानो, अपने आप को पहचानो'।

-रविन्द्र कुमार भुम्बक

सहायक प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा,

राजकीय महाविद्यालय, भट्टूकलां, मो.: 94672-43123

अमर बलिदानी उमाराम जाट

- बीखाणौ बड़ भागियौ, मंझ मरुधरा खास।
  ऊमै रै बलिदान सूं, भूमि भयौ उजास ॥1 ॥
- रोही मां रमता फिरै, मिरग मनोहर मास।
  जीवां सांरु तन तज्यौ, खरतर ऊमौ खास ॥2 ॥
- नागाणै नर नाहर बसै, भांभू जाट भूरैश।
  सिंघणी शावक जलमियौ, सुत जायौ ऊमैश ॥3 ॥
- ऊमौ मन उनमादियौ, धरज धारी दैह।
  भरै चौकड़ी चालता, मिरगलियां सूं नैह ॥4 ॥
- ऊमै कुल उजालियौ, जाटां तणी जमात।
  जबर पूत जरणी जिण्यौ, धिन है थारी मात ॥5 ॥
- थारी माँ थांनै जिण्यौ, सैर सूंठ ने खाइ।
  हालरियौ हुलरावती, दूधज मति लजाइ ॥6 ॥
- जाट निरमल गंग ज्यूं, जो खलकै शिव अंग।
  जीव उबारै रूख रुखालै, रंग चौधरी रंग ॥7 ॥
- जांभाणी उपदेश सुणै, बिश्नोइयौं के संग।
  मूवा मुगती लाभसी, और जीणै रो ढंग ॥8 ॥
- सादा जीवन उच्च विचार, ओ अंदाज निरालौ।
  जाट जुनूनी जबर है, नाज भलौ नखरालौ ॥9 ॥
- सीधा सरल सुभाव रा, जीणै रो ढ़ग न्यारौ।
  कोठै सो होठै धरै, करदै न्यारौ व्यारौ ॥10 ॥
- ड्यूटी पर डकरैल चढ्यौ, दे डंकै री चोट।
  पापी जे पकड़ाय ग्या, सकल निकालु खौट ॥11 ॥
- रोही रमता जीवड़ा, करै शिकारी घात।
  पापी पकड़ण चालिया, बखतर पड़ियौ हाथ ॥12 ॥
- तातै तो ततकारिया, माठा मारै माथ।
  पापी पजता दैख नै, करि सिंघ पर घात ॥13 ॥
- छप्पन इंच सीनो हथौ, कालजियौ सवा सैर।
  सीधो सुरगा पूगियौ, जंभ गुरु की मैर ॥14 ॥
- निरबल ने संबल दियौ, तन मन कर कुरबान।
  चांद सूरज की साक्षी, अमर रहै बलिदान ॥15 ॥
- ऊमा तेरी ऊमरड़ी, सौ बरस सम थाय।
  सूरा सड़ै न खाट में, नहीं अकारज जाय ॥16 ॥
- आया है सो जायेगा, अठै रहै ना कोय।
  सूरो छुपकर नहीं रहै, होनी हो सो होय ॥17 ॥
- जाट जबर जोपिजीयौ, भूरौ नाम भांभू।
  जिण घर जलमियौ ऊमजी, शिव शंकर शंभु ॥18 ॥
- खिलेरी ऊदौ कहै, अहिंसा परमो धरम।
  जीव जतन ऊमै कियौ, पूग्यौ धाम परम ॥19 ॥
- ऊमौ अव्वल पुलिसीयौ, ड्यूटी पर डट जाय।
  भाग्यौ नहीं भिड़ गयौ, जान भलै ही जाय ॥20 ॥
- अपराधी ने आज कल, नहीं पुलिस रो खौप।
  पुलिस बल पौचौ पड्यौ, कठै गयौ बौ रोप ॥21 ॥
- प्रबल होय पुलिस बल, अफसर हो आजाद।
  ऊमै जैड़ा हो आदमी, जद रैवै मरजाद ॥22 ॥
- मरणो ताकै मानवी, पण पूठौ नहीं पड़ै।
  किरतब ही किरतार है, ऊमौ इतिहास घड़ै ॥23 ॥
- उद्भट ऊमौ आकरौ, डरपियौ नहीं डकरैल।
  अरियौं सूं अड़ियौ अव्वल, जाट बड़ो जबरैल ॥24 ॥
- जाटे जबरो सोचियौ, जीव उबारै जोर।
  ऐ निरदोषी जीवड़ा, हिरण खिरगला मोर ॥25 ॥
- जाट जमारो जोर रो, उत्तम कुल अधिकारी।
  ऊमै राखी आखड़ी, हूँ जाऊं बलिहारी ॥26 ॥
- नर नाहर है ऊमजी, जीवट जाट कहवाय।
  इंऊं आयौ इंऊं जावसी, मनड़ै नहीं मनाय ॥27 ॥
- भांभू कुल ऊजल कियौ, ऊजल वंश अंनत।
  पांच पीढी पुरखा तिरी, ऊमौ गयौ जन्नत ॥28 ॥
- कवि तो कोरै कांगरा, ईट नींव री चहियै।
  खैल खरा सूं चालसी, पंथ जांभाणौ बहियै ॥29 ॥
- सोनो रतन है सोहलवौं, कदै न लागै काट।
  जीवां खातर जान दी, असल कहिजै जाट ॥30 ॥
- जाटों थारी जहाजड़ी, भव सागर भरियौह।
  सात पीढ़ी ले साथ में, ऊमौ आज तरियौह ॥31 ॥
- जाट ऊजालौ जगत में, सूरज चाँद सवाई।
  ऊमौ उण सूं ऊजलौ, पुन री पाल बंधाई ॥32 ॥
- ऊमौ सुत भूरैश रो, भांभू कुल रौ दियौ।
  एक ही बेटो बापरै, किरतब चौखौ कीयौ ॥33 ॥

- शारद बेटी साहब री, लाडकड़ौ राकेश।
  मुन्ना मन सूं खूब पढ़ौ, हरि भैला हरमैश ॥34॥
- नागाणौ चावौ नाव सूं, कालड़ी करि ऊमेंश।
  ऊमै जैड़ा आदमी, नहीं जलमै हर दैश ॥35॥
- जाट बिश्नोई एक हथा, है इतिहास गवाही।
  बाबौ बैलै आवियौ, जग में करो भलाई ॥36॥
- भैला रहियौ भाइड़ा, धरम बचावण काज।
  जीव बचावै जगत रा, जाटे राखी लाज ॥37॥
- जाट दयालु कोम है, धरम धजा रा धारी।
  माया है महादेव री, नहीं है थारी म्हारी ॥38॥
- बहिन हस्तु बाई को दिलासारू-
- वीरो थारो बावली, सुरगा पहुंच गयौ।
  राखी बांधो रूख रै, हरि रो हाथ कह्यौ ॥39॥
- माता चम्पादेवी को दिलासारू-
  माता मन ममता घणी, हियौ हिबौला खाय।
  अमर हुवौ है ऊमजी, इण में नहीं दो राय ॥40॥
- पिताजी भूरारामजी को दिलासारू-
  भूरा मत भरमिजीयै, गयौ सो पासौ आसी।
  सुघड़ नर ओ सुरग सूं, पासो आ बतलासी ॥41॥
- जलम लेसी फिर जाट घर, शिव शंकर वरदान।
  ऊदै री अरदास है, मान भलै मत मान ॥42॥
- वीरागंना भजनादेवी को दिलासारू-
  भजनी भजन भगवान रा, करियौ जग री रीत।
  ऊमौ गयौ आकाश में, जग में जसड़ौ जीत ॥43॥
- हियौ हमकै हैत सूं, धरम धक्कौ नहीं आवै।
  पर उपकारी जीवड़ौ, सीधो सुरगा जावै ॥44॥
- खिलेरी ऊदो कहै,गांव है मेघावास।
  शहिदा रो सुमरण करै, है जंभगुरु रो दास॥

-मास्टर उदयराज खिलेरी (बिश्नोई)
गांव-मेघावाध्वीरावा, वाया- सांचोर,
जिला-जालोर-343041 (राज)
मो.: 9828751199

समय के साथ परिवर्तन

कठै गया बे गाँव आपणा कठे गयी बे रीत।
कठे गयी बा, मिलनसारिता, गयो जमानो बीत॥
दु:ख दर्द की टेम घड़ी में काम आपस में आता।
मिनख सूं मिनख जुड्य रहता, जियां जनम जनम नाता।
तीज-त्योंहार पर गाया जाता, कठै गया बे गीत॥
कठै गयी बा, मिलनसारिता, गयो जमानो बीत॥1॥
गुवाड़-आंगन बैठ्या करता, सुख-दु:ख की बतियाता।
बैठ एक थाली में सगळा, बाँट-चँट कर खाता।
महफिल में मनवारां करता, कठै गया बे मीत॥
कठै गयी बा, मिलनसारिता, गयो जमानो बीत॥2॥
कम पीसो हो सुख ज्यादा हो, उण जीवन रा सार मैं।
छल-कपट, धोखाधड़ी, कोनी होती व्यवहार मैं।
परदेश में पाती लिखता, कठै गयी बा प्रीत॥
कठै गयी बा, मिलनसारिता, गयो जमानो बीत॥3॥

-पुखराज थालोड़
पड़ियाल, फलौदी, मो. 8696230487

गुरु का आशीर्वाद

मैं कवि हूँ कविता करता हूँ।
मैं भक्त हूँ पूजा करता हूँ॥
जाम्भोजी का सिमरन करता हूँ।
विष्णु जी का वन्दन करता हूँ॥
मैं नित्य प्रभु का नाम लिया करता हूँ।
नाम से मन की गागरभर लिया करता हूँ॥
मैं इस में बस डुबकी लगाया करता हूँ।
मैं अपना जीवन सुखी बनाया करता हूँ॥
मैं सन्तो की बाणी सुना करता हूँ।
मैं मन को पावन किया करता हूँ॥
मैं सन्तों की सेवा किया करता हूँ।
मैं मन में मेवा भर लिया करता हूँ॥
मैं नियमों का पालन किया करता हूँ।
मैं सबदवाणी का चिंतन किया करता हूँ॥
मैं गुरु जम्भेश्वर को याद किया करता हूँ।
मैं 'सुधाकर' गुरु का आशीर्वाद लिया करता हूँ॥

कविरत्न ओ.पी. बिश्नोई 'सुधाकर'
बिश्नोई सदन, 31, प्रियदर्शनी अपार्टमेन्ट्स,
ए-4,पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110063

दर्शन तथा धर्म का मर्म

अंतरिक्ष व्यवस्था में समस्तग्रहों अथवा उल्कापिण्डों के धर्म हैं। ज्वलनशील अवस्था में ग्रह तथा उल्कापिण्ड का धर्म है धधकते रहना। शांत अथवा ठण्डे पड़ चुके ग्रह तथा उल्कापिण्डों का धर्म है, जीव अथवा अजीव रूप में सरंचना होने देना। अंतरिक्ष में उत्तयत अनेक गैसों का धर्म है कि अपनी-अपनी प्रकृति के अनुरूप आचरण करना। हम धरतीवासी समस्त कायनात के धर्म पर चर्चा करते हुए धरती पर प्रकृति के द्वारा दी गई करोड़ों वनस्पतियों तथा 84 लाख प्राणयोनियों की सुन्दरता के बीच जीते हैं। धर्म की चर्चा करते हुए यह आम धारणा है कि धर्म अरचना/अर्चना करने की या जीवन जीने की वह शैली है, जिसे एकरूपता में किसी मत का नाम दे दिया गया जैसे वैष्णव, शैव, शाक्त, जैन, बौध, ईसाई, इस्लाम, यहूदी और भी अनेक। परन्तु भारतीय पौराणिक विचारधारा ने सनातन धर्म शब्द को मूर्त रूप दिया दुर्भाग्यवश भ्रान्तियों से ग्रस्त अज्ञानता से पीड़ित अधिकतर मानव समाज सनातन धर्म को मूर्ति पूजा के रूप में देखना या वैदिक मंत्रोच्चार तक सीमित रखती है। परन्तु वास्तविकता यह है सनातन धर्म शब्द का अर्थ पूरी कायनात में विद्यमान प्रत्येक चर-अचर की प्रकृति से है जिसे उसका अनुशरण करना ही पड़ता है।

धर्म शब्द अर्चना विधि, विचारधारा जीवनशैली, सुविधा-भोग इत्यादि सभी चीजों से हटकर किसी भी व्यक्ति अथवा वस्तु का प्रकृति प्रदत्त स्वरूप है जिसका उसे अनुशरण करना चाहिए, करता है या करना ही पड़ेगा। उदाहरण स्वरूप सर्प प्रकृति की सर्वोत्तम देन है। यह प्राणी प्रति मिनट अपने आस-पास के आधे किलोमीटर का प्रदूषण आत्मसात करता रहता है। यह प्रदूषण ही उसकी विषक्त ग्रन्थियों में जाकर गाढे नीले द्रव्य के रूप में परिवर्तित हो जाता है। जिसके कारण उसके शरीर में भयंकर गर्मी उत्पन्न होती है। क्योंकि सर्प का धर्म है कि प्रदूषण का आत्मशक्तिकरण करे इसलिए वह अपने शरीर पर इतनी भयंकर यातना को सहन करता है। अग्नि का धर्म है ज्वलनशील रहना ऑक्सीजन गैस अत्यधिक ज्वनशील होती है। परन्तु यदि मनुष्य इसका स्पर्श करता है तो ठण्डक का अनुभव करता है। इसी प्रकार से ऑक्सीजन गैस तथा हाइड्रोन गैस के निश्चित अनुपात में अणुओं के मिलने पर पानी का रूप धारण करता है। पानी की प्रकृति ज्वलनशील तत्वों के विपरीत होती है। परन्तु उत्पत्ति ज्वलनशील तत्व के कारण होती है। इसी प्रकार से यदि हम धरती पर विद्यमान अनेक प्राणियों और वनस्पतियों के स्वभाव का विष लेप करें तो हमें सबके स्वभाव में विविधता एवं निश्चितता स्पष्ट दिखाई देगी। मेरे दृष्टिकोण में यह विविधता तथा उस विविधता में निरत निश्चितता उस वनस्पति एवं जीव का धर्म है।

धरती की संरचना में सभी प्राणियों का अपना-अपना योगदान है, ये अपने धर्म के अनुरूप आचरण करते हुए धरती को युगों-युगों से व्यवस्थित एवं अलंकृत करते आये हैं। मनुष्य तथा अन्य प्राणियों में आहार, निद्रा, भय तथा मैथ्यून सामान्य तत्व हैं परन्तु विवके एक अतिरिक्त तत्व के रूप में मनुष्य को सशक्तिकृत करता आया है। यद्यपि बन्दर, घोड़ा, हाथी ऊँट, गाय इत्यादि ऐसे स्तनधारी प्राणी हैं जो मनुष्य की निर्णय शक्ति से तो पीछे है परन्तु विवेकशक्ति से इस हद तक सम्पन्न है कि प्रशिक्षण प्राप्त कर लेते हैं। कुत्ते को मनुष्य ने प्रशिक्षत करके उसके सूंघने की क्षमता का लाभ अपनी सुरक्षा के लिए इस्तेमाल किया। घोड़े की स्वामीभक्ति तथा तीव्र धावक क्षमता गुणों की पहचान कर खूब लाभ उठाया। गाय के शान्त स्वभाव में मातृतत्त्व गुण की बहुलता की पहचान कर हर बच्चा-बूढ़ा-जवान दूध प्राप्त कर लेता है। इसी प्रकार से मनुष्य ने लगभग सभी खुंखार से खुंखार प्राणियों की व्यवहारगत वस्तुस्थिति को पहचान कर अपने वश में कर लिया।

मनुष्य ने अपनी निर्णायक क्षमता और मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर अपनी स्वयं की समस्याओं का समाधान करने के लिए प्रकृति में उपलब्ध साधनों को संसाधन बनाया। इन संसाधनों को व्यवस्थित ज्ञान के जरीये अविष्कार किए। आविष्कारों की प्रक्रिया खोजों एवं अनुसंधानों के बीच बनते बिगड़ते हुए युगों से होती चली आ रही है। मानव स्वभाव का बुनियादी गुण है जिज्ञासा। जिज्ञासाओं को शांत करने के लिए कब कहाँ

कैसे, क्यों प्रश्नों में सदा घूमता रहता है उसके इन प्रश्नों के उत्तर कभी तो अनायास प्राप्त हो जाते हैं और कभी पूर्व में अर्जित अनुभवों में कड़ीबद्ध करके विज्ञान के रूप में प्राप्त होते हैं। मनुष्य अपने मन की गतियों के द्वारा ब्रह्माण्ड में छुपे हुए अनेकों तथ्यपूर्ण अर्थों को खोजने का सतत् प्रयास करता आया है। इन मूल अर्थों को समझने के लिए मनुष्य ने अपने विचारों की परीक्षा हमेशा की है। परीक्षा के औजारों पर प्राप्त परिणामों से आकड़ों का निर्माण कर भावी खोजों का आधार तैयार किया। इन बनते-बिगड़ते आकड़ों से धीरे-धीरे कड़ीबद्ध ज्ञान के रूप में विज्ञान ने जन्म ले लिया। ब्रह्माण्ड में स्थिति ज्ञान के गुटअर्थ को प्राप्त करने के बाद और विज्ञान की कड़ी कसौटी कसने के बाद शत् प्रतिशत विश्वसनीय अपरिवर्तनशील, सत्य का जन्म हुआ। युगों-युगों से स्थापित तथा विभिन्न मानवीय सभ्यताओं के आते-जाते रहने वाले समूहों के बीच में सत्य अपने मूलरूप में ही स्थापित रहा। मेरे दृष्टिकोण में यह स्थापित सत्य ही धर्म है। धर्म को धारण करना दर्शन है। धर्म प्रत्येक व्यक्ति, परिवार, समुदाय, समाज, राष्ट्र तथा विश्व का जहाँ एक और एक ही होता है। वहीं दूसरी और दृष्टिकोण के परिवर्तन के कारण कुछ भिन्न भी दिखाई देता है। यह भिन्न दिखाई देने वाला धर्म किसी काल विशेष में किसी विशेष भू-भाग में बसने वाली किसी आबादी का हिस्सा हो सकता है। इकाई स्तर पर हम इसे विचार शब्द से सम्बोधित करते हैं। परन्तु जब एक विचार में अनेक लोगों के अनेक समरूप विचार दीर्घकाल तक तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमासा एवं आचार मीमासा का हिस्सा बनी रहती है तो हम इसे विचारधारा कह बैठते हैं। यह विचारधारा जब काल की परिधि से ऊपर उठकर अनन्त की स्थिति तक पहुँच जाती है तब हम इसे दर्शन शब्द से सम्बोधित कर देते हैं। मेरा मानना यह है कि दर्शन में आमूलचूल परिवर्तन कभी नहीं होता अपने केन्द्र भाव में दर्शन धर्म होता है। दर्शन सत्य होता है, दर्शन स्थापित होता है तथा दर्शन अपरिवर्तनशील होता है। केन्द्र की परिधि के चारों तरफ घुमते हुए विविध विचार टूट-फूट से ग्रस्त रहते हैं। जो क्षणिक तात्कालिक, अस्थापित, परिवर्तनशील तथा भ्रामक होते हैं। इस को जनसाधारण व्यक्ति अपनी आम बोलचाल की भाषा में यह कह बैठता है कि धर्म ही दर्शन है। दर्शन परिवर्तनशील है और धर्म का कोई अपना अस्तित्व नहीं है। जबकि वास्तव में धर्म केवल धर्म है। जिसे धारण करना समस्त भू-तत्वों का अपरिवर्तनशील सत्य है।

समाज भौतिक सुखों की ओर तेजी से भागते हुए धर्म से विमुख होने पर प्रगतिशीलता की मोहर लगाता है। भौतिक सुखों से पीड़ित होने के कारण आत्मज्ञान तथा आत्मदृष्टि से धनी मनुष्य आज वैज्ञानिक उपकरणों एवं तकनीकीयों के माध्यम से उन क्षमताओं को जी पा रहा है। जिनसे धनी संजय ने धृतराष्ट्र को दूरदर्शन की भान्ति महाभारत के युद्ध का सजीव चित्रण किया था। चिरहरण की स्थिति में द्रोपदी की पुकार को श्रीकृष्ण ने मोबाइल/अंतर्आत्मा फोन के माध्यम से सुन लिया था। सीता का हरण करने के लिए उस समय का विमान आज के विमान से कम नहीं था। जब संजीवनी बूटी लाने के लिए हनुमान पूरा हिमालय उखाड़ लाए थे। जिस शक्ति का परिचय अनेक आध्यात्मिक शास्त्रों, कहानियों कथाओं घटनाक्रम के माध्यम से कराते हैं। वह आज हम काल्पनिक मानते हैं। वैसे तो मैं इन सारी कथाओं में सत्यगत तथ्य का अनुभव करता हूँ। परन्तु फिर भी मानव के कल्पनाशील दर्शन ने ही आज हमें इस योग्य बना रखा है कि हम उन कल्पनाओं को मूर्तरूप प्रदान करके भौतिकरूप से सुविधा सम्पन्न हैं। अत: दर्शन का अर्थ उस सिद्धान्त से है जो पदार्थों में छिपी अतं:शक्ति को खोजता है। वहीं धर्म का संबंध ज्ञान के उस सिद्धान्त से है, जो चेतना के भीतर छिपी हुई अंतसशक्ति को खोजता है। पाश्चात्य देशों ने जो संस्कृति दी वह अतिवादी रही। उसकी बुनियाद में दर्शन तो रहा, किन्तु धर्म का महत्व गिरा है। तमाम सुख-सुविधा, ऐश्वर्य और संसाधनों के बावजूद उसने अंतर्आत्मा की आवाज को खो दिया। दर्शन सुविधा देता है, धर्म शांति देता है। दर्शन विवेक होगा और धर्म उसका अनुचर। दर्शन बहिर्मुखी है जबकि धर्म अंतर्मुखी। व्यापक को खोजने की नहीं आज पहचानने की आवश्यकता है।

मेरे दृष्टिकोण में दर्शन तथा धर्म का मर्म यही है।

-**डॉ. राजपाल,** सहायक प्रोफेसर,
आकाश शिक्षण महाविद्यालय,
चंदड़ कलां, टोहाना (फतेहाबाद)

रामकथा में अभिव्यक्त प्रकृति प्रेम

आसोज और कार्तिक दोनों ही महीने त्योहारों के महीने हैं। इन दो महीनों में जितने उत्सव मनाये जाते हैं उतने शायद बाकी पूरे वर्षभर भी नहीं। ये दोनों ही माह भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भ भगवान श्रीराम को समर्पित हैं। क्या कभी हमने गौर किया है कि राम और प्रकृति की उपासना का घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस लेख में रामराज्य राम कथा में प्रकृति की संरक्षण की भावना का उल्लेख किया जा रहा है। यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि श्रीराम और जम्भेश्वर जी महाराज दोनों ही विष्णु के अवतार थे और दोनों के अनुयायिओं के लिए प्रकृति कितनी महत्वपूर्ण थी। अत: आइये इस पावन माह में प्रकृति और रामकथा प्रेम के अभिन्न सम्बन्ध को जानें।

हमारी प्राचीन संस्कृति 'अरण्य-संस्कृति' या 'तपोवन-संस्कृति' के नाम से जानी जाती रही है। 'रामगाथा' में सीता जी बेर तोड़ती हैं, टेंटी का चूर्ण बनाती हैं। छयोंकर की फलियाँ खाने से बकरी के दूध में उसकी गंध आ जाती है, सीता को यह ज्ञात है। पीपल की सूखी टहनियों में लाख चिपटी होती है। गाँव के जंगल में सियार, खरगोश आदि जंतु प्रचुर संख्या में हैं। सियारों को जब खाने को कुछ नहीं मिलता तो वे झरबेरी के बेर खाकर उन्हें लसदार विष्टा के रूप में ज्यों का त्यों निकाल देते हैं। कभी-कभी सियार पीपल के गिरे हुए फल पिपलियाँ (नन्हे-नन्हे गूलर) खाया करते हैं। इन्हें देखकर कभी-कभी भेड़िया होने का भ्रम हो जाता है। यह जानकारी चौती नामक वन कन्या सीता को देती है। वर्षा ऋतु में वह सीता को यह भी बताती है कि जामुन के पेड़ पर बंदर बैठा हो और उसे पत्थर दिखाया जाए तो वह डाल को लकलकाकर पके जामुनों की वर्षा कर देता है। (सहयोग: राम काव्य ग्रंथों से)

'श्रीरामचरितमानस' में तुलसीदास जी ने इस बात पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के सिंहासन पर आसीन होते ही सर्वत्र हर्ष व्याप्त हो गया, सारे भय-शोक दूर हो गए एवं दैहिक, दैविक और भौतिक तापों से मुक्ति मिल गई। इसका प्रमुख कारण यह है कि रामराज्य में किसी भी प्रकार का प्रदूषण नहीं था। इसीलिए कोई भी अल्पमृत्यु, रोग-पीड़ा से ग्रस्त नहीं था, सभी स्वस्थ, बुद्धिमान, साक्षर गुणज ज्ञानी तथा कृतज्ञ थे।

राम राज बैठे त्रैलोका।
हरषित भए गए सब सोका॥
बयस न कर काहू सन कोई।
राम प्रताप विषमता खोई॥
दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम राज नहिं काहुहि ब्यापा॥
अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा।
सब सुंदर सब बिरुज सरीरा॥
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना।
नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना॥
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी।
सब तज्ञ नहिं कपट सयानी॥
राम राज नभगेस सुनु
सचराचर जग माहिं।
काल कर्म सुभाव गुन त
दु:ख काहुहि नाहिं॥

(रा.च.मा. 7।20।7-8; 21।1, 5-6, 8; 21)

वाल्मीकि रामायण में श्रीभरत जी रामराज्य के विलक्षण प्रभाव का उल्लेख करते हुए कहते हैं, 'राघव! आपके राज्य पर अभिषिक्त हुए एक मास से अधिक समय हो गया। तब से सभी लोग निरोग दिखाई देते हैं। बूढ़े प्राणियों के पास भी मृत्यु नहीं फटकती है। स्त्रियाँ बिना कष्ट के प्रसव करती हैं। सभी मनुष्यों के शरीर हृष्ट-पुष्ट दिखाई देते हैं। राजन! पुरवासियों में बड़ा हर्ष छा रहा है। मेघ अमृत के समान जल गिराते हुए समय पर वर्षा करते हैं। हवा ऐसी चलती है कि इसका स्पर्श शीतल एवं सुखद जान पड़ता है। राजन नगर तथा जनपद के लोग इस पुरी में कहते हैं कि हमारे लिए चिरकाल तक ऐसे ही प्रभावशाली राजा रहें। 'पाप से पापी की हानि ही नहीं होती अपितु वातावरण भी दूषित होता है, जिससे अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। रामराज्य में पाप का

अस्तित्व नहीं है, इसलिए दु:ख लेशमात्र भी नहीं है। पर्यावरण की शुद्धि तथा उसके प्रबंधन के लिए रामराज्य में सभी आवश्यक व्यवस्थाएँ की जाती रहीं। वृक्षारोपण, बाग-बगीचे, फल-फूलवाले पौधे तथा सुगंधित वाटिका लगाने में सब लोग रुचि लेते थे। नगर के भीतर तथा

बाहर का दृश्य मनोहारी था

सुमन बाटिका सबहिं लगाईं।
बिबिध भाँति करि जतन बनाईं॥
लता ललित बहु जाति सुहाई।
फूलहिं सदा बसंत कि नाईं॥ (रा.च.मा. 7।28।1-2)
बापीं तड़ाग अनूप कूद मनोहरायत सोहहीं।
सोपान सुंदर नीर निर्मल देखि सुर मुनि मोहहीं॥
बहु रंग कंज अनेक खग कूजहिं मधुप गुंजारहीं।
आराम रम्य पिकादि खग रव जनु पथिक हंकारहीं॥
रमानाथ जहं राजा सो पुर बरनि कि जाइ।
अनिमादिक सुख संपदा रहीं अवध सब छाइ॥

(रा.च.मा. 7।29।छ-29)

अर्थात् सभी लोगों ने विविध प्रकार के फूलों की वाटिकाएँ अनेक प्रकार के यत्न करके लगा रखी हैं। बहुत प्रकार की सुहावनी ललित बेलें सदा वसंत की भाँति फूला करती हैं। नगर की शोभा का जहाँ वर्णन नहीं किया जा सकता, वहाँ बाहर चारों ओर का दृश्य भी अत्यंत रमणीय है। रामराज्य में बावड़ित्रयाँ और कूप जल से भरे रहते थे, जलस्तर भी काफी ऊपर था। तालाब तथा कुओं की सीढ़ियाँ भी सुंदर और सुविधाजनक थीं। जल निर्मल था। अवधपुरी में सूर्य-कुंड, विद्या-कुंड, सीता-कुंड, हनुमान-कुंड, वशिष्ठ-कुंड, चक्रतीर्थ आदि तालाब थे, जो प्रदूषण से पूर्णत: मुक्त थे। नगर के बाहर- अशोक, संतानक, मंदार, पारिजात, चंदन, चंपक, प्रमोद, आम्र, पनस, कदंब एवं ताल-वृक्षों से संपन्न अनेक वन थे।

'गीतावली' में भी सुंदर वनों-उपवनों के मनोहारी दृश्यों का वर्णन मिलता है-

बन उपवन नव किसलय, कुसुमित नाना रंग।
बोलत मधुर मुखर खग पिकबर, गुंजत भृंग॥

(गीतावली उत्तरकांड 21।3)

अर्थात् अयोध्या के वन-उपवनों में नवीन पत्ते और कई रंग के पुष्प खिलते रहते थे, चहचहाते हुए पपीहा और सुंदर कोकिल सुमधुर बोली बोलते हैं और भौंरे गुंजार करते रहते थे।

रामराज्य में जल अत्यंत निर्मल एवं शुद्ध रहता था, दोषयुक्त नहीं। स्थान-स्थान पर पृथक-पृथक घाट बँधे हुए थे। कीचड़ कहीं भी नहीं होता था। पशुओं के उपयोग हेतु घाट नगर से दूर बने हुए थे और पानी भरने के घाट अलग थे, जहाँ कोई भी व्यक्ति स्नान नहीं करता था। नहाने के लिए राजघाट अलग से थे, जहाँ चारों वर्णों के लोग स्नान करते थे-

उत्तर दिसि सरजू बह निर्मल जल गंभीर।
बांधे घाट मनोहर स्वल्प पंक नहिं तीर॥
दूरि फराक रुचिर सो घाटा।
जहं जल पिअहिं बाजि गज ठाटा॥
पनिघट परम मनोहर नाना।
तहां न पुरुष करहिं अस्नाना॥

(रा.च.मा. 7।28; 29।1-2)

रामराज्य में शीतल, मंद तथा सुगंधित वायु सदैव बहती रहती थी-

गुंजत मधुकर मुखर मनोहर।
मारुत त्रिबिध सदा बह सुंदर॥ (रा.च.मा. 7।28।3)

पक्षी-प्रेम रामराज्य में अद्वितीय था। पक्षी के पैदा होते ही उसका पालन-पोषण किया जाता था। बचपन से ही पालन करने से दोनों ओर प्रेम रहता था। बड़े होने पर पक्षी उड़ते तो थे किंतु कहीं जाते नहीं थे। पक्षियों को रामराज्य में पढ़ाया और सुसंस्कारित किया जाता था।

सुक सारिका पढ़ावहिं बालक।
कहहु राम रघुपति जनपालक॥ (रा.च.मा. 7।28।7)

रामराज्य की बाजार-व्यवस्था भी अतुलनीय थी। राजद्वार, गली, चौराहे और बाजार स्वच्छ, आकर्षक तथा दीप्तिमान रहते थे। विभिन्न वस्तुओं का व्यापार करने वाले कुबेर के समान संपन्न थे। रामराज्य में वस्तुओं का मोलभाव नहीं होता था। सभी दुकानदार सत्यवादी एवं ईमानदार थे-

बाजार स्र्चिर न बनइ बरनत, बस्तु बिनु गथ पाइए।

(रा.च.मा. 7।28)

रामराज्य में तो यहाँ तक ध्यान रखा जाता था कि जो पौधे चरित्र-निर्माण में सहायक हैं, उनका रोपण अधिक किया जाना चाहिए। पर्यावरण-विशेषज्ञों तथा आयुर्वेदशास्त्र की मान्यता है कि तुलसी का पौधा जहाँ सभी प्रकार से स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है वहाँ चरित्र-निर्माण में भी सहायक है। यही कारण है कि रामराज्य में ऋषि-मुनि नदियों के तथा तालाबों के किनारे तुलसी के पौधे लगाते थे-

तीर तीर तुलसिका सुहाई।
बृंद बृंद बहु मुनिन्ह लगाई॥ (रा.च.मा. 7।29।6)

रामराज्य में सब लोग सत्साहित्य का अनुशीलन करते थे। चरित्रवान और संस्कारवान थे। सबके घरों में सुखद वातावरण था और सभी लोग शासन से संतुष्ट थे। जहाँ राजा अपनी प्रजा का पालन पुत्रवत करता हो वहाँ का समाज निश्चित ही सदा प्रसन्न एवं समृद्ध रहता है। उन अवधपुरवासियों की सुख-संपदा का वर्णन हजार शेष जी भी नहीं कर सकते, जिनके राजा श्रीरामचंद्र जी हैं-

सब के गृह गृह होहिं पुराना।
रामचरित पावन बिधि नाना।
नर अस्नारि राम गुन गानहिं।
करहिं दिवस निसि जात न जानहिं।
अवधपुरी बासिन्ह कर सुख संपदा समाज।
सहस सेष नहिं कहि सकहिं जहं नृप राम बिराज॥

(रा.च.मा. 7।26।7-8; 26)

इस प्रकार रामराज्य में किसी भी प्रकार का दूषित परिवेश नहीं था। राजा तथा प्रजा में परस्पर अटूट स्नेह, सम्मान और सामंजस्य था। मनुष्यों में जहाँ वैरभाव नहीं रहता वहाँ पशु-पक्षी भी अपने सहज वैरभाव को त्याग देते हैं। हाथी और सिंह एक साथ रहते हैं- परस्पर प्रेम रखते हैं। वन में पक्षियों के अनेक झुण्ड निर्भय होकर विचरण करते हैं। उन्हें शिकारी का भय नहीं रहता। गौएँ कामधेनु की तरह मनचाहा दूध देती हैं।

रामराज्य में पृथ्वी सदा खेती से हरी-भरी रहती थी। चंद्रमा उतनी ही शीतलता और सूर्य उतना ही ताप देते थे जितनी जरूरत होती थी। पर्वतों ने अनेक प्रकार की मणियों की खानें प्रकट कर दी थीं। सब नदियाँ श्रेष्ठ, शीतल, निर्मल, स्वादिष्ट और सुख देनेवाला जल बहाती थीं। जब जितनी जरूरत होती थी, मेघ उतना ही जल बरसाते थे-

फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन। रहहिं एक संग गज पंचानन॥
खग मृग सहज बयरु बिसराई। सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई॥
कूजहिं खग मृग नाना बृंदा। अभय चरहिं बन करहिं अनंदा॥
लता बिटप मागें मधु चवहिं। मनभावतो धेनु पय स्रवहीं॥
बिधु महि पूर मयूखन्हि रबि तप जेतनेहि काज।
मागें बारिद देहिं जल रामचंद्र कें राज॥

(रा.च.मा. 7।23।1-3, 5; 23)

क्रमशः अगले अंक में...

-डॉ. राजा राम
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, भट्टू, फतेहाबाद

ओ! गौरैया

मुँडेर पर.....
न तुम्हारी चहचाहट है
न ही छाबड़ी पर.....
तुम्हारे कब्जे का दावा!
ओ! गौरैया
क्या तुम रूठ गई!
मैं तुम्हें कैसे मनाऊँ?
तुम! फिर लौट आओ
मेरे सूने आँगन में!
बताओ! मैं तुम्हें!
कैसे मनाऊँ.....
आखिर कैसे?

❐ **शर्मिला,** शोधार्थी, हिन्दी विभाग
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

जीव दया पालणी, रूंख लीलो नहीं घावै

जीवों की रक्षा करते हुए बलिदानकर्ताओं धर्मवीरों की बहुत बड़ी संख्या बिश्नोई समाज के पास है। आगे भी निरंतर प्रयत्नशील है। इस प्रकार से शिकारियों के साथ संघर्ष करते हुए अपने प्राणों की बलि दी है। यह सिलसिला निरंतर जारी है। समाज के धर्मप्रेमी प्रबुद्धजनों को एक-साथ बैठकर सोचने का समय आ गया है। केवल हम ही कब तक बलिदान देते रहेंगे फिर भी वन्य जीवों की रक्षा नहीं हो रही है। शिकार निरंतर जारी है। ये थोड़े से वन्य जीव बचे हैं जल्दी ही ये लोग मारकर खा जायेगे। हमारे जैसे बचाने वालों से मारने या मरवाने वाले अधिक हैं। सरकार द्वारा बनाई हुई कानून व्यवस्था की वे ही लोग धज्जियां उड़ा रहे हैं। समय के अनुसार हमें सोचना होगा और समाधान निकालना होगा।

राजस्थान में अब भी गोचरभूमि बहुत है। कुछ तो पास पड़ोस के लोग कब्जा कर रहे हैं तथा अधिकतर भूमि पर वन विभाग ने तारबंदी करके कब्जा कर लिया है। उस भूमि का कुछ भी उपयोग नहीं हो रहा है। गायों के चरने की सामूहिक भूमि में केवल लम्बी-लम्बी सूलवाले विदेशी कीकर लगा दिये हैं वे किसी काम के नहीं हैं। भूमि को बरबाद कर दिया है। वन एवं वन्यजीवों का संरक्षण के नाम से जनता की मेहनत की कमाई को ठिकाने लगा रहे हैं। न तो वहां पर वन हैं और न ही वन्यजीव हैं। केवल कीकर और कर्मचारियों की भीड़ है। इस समय मेरी सामान्य जानकारी के अनुसार बीकानेर जिले में ही निम्नलिखित गोचरभूमि है-

देसनोक में लगभग - 4000 बीघा गोचरभूमि।

जांगलू - 3000। पांचू 2000, सांईसर 1700, नाथूसर 1200, धरणोक 700, मुकाम 1700 बीघा में है और भी प्रत्येक गांव में गोचर भूमि नहीं है। यहां बताना मेरे लिये संभव नहीं है।

मेरा यह निवेदन है कि इस ओरण की भूमि का सदुपयोग सरकार द्वारा करवाया जावे। यहां पर अभयारण की स्थापना की जावे। यहां पर ट्यूबवैल खुदवाकर जल की व्यवस्था की जावे। वन्य तथा अन्य जानवर जैसे गाय, रोज, हिरण आदि शाकाहारी जीवो को इस भूमि में खुला घूमने दे। अन्दर ही चारा पानी की व्यवस्था कर दी जावे। दानी सज्जनों का आह्वान किया जायेगा तो किसी बात की कमी नहीं आयेगी। मेरी समझ से वर्तमान की गौशाला व्यवस्था से यह व्यवस्था अच्छी रहेगी। सरकार मजबूत तारबंदी कर दे तो हजारों बीघा में हिरण गो आदि स्वच्छन्द विचरण कर सकेंगे।

इस कार्य को सिरे चढ़ाने के लिये सभी धर्म प्रेमी सज्जनो को एकता करके इस कार्य को पूर्ण करना होगा। संघेशक्तिकलयुगे..

इस समय सरकार से अपनी बात मनवाने के लिये आन्दोलन करने की आवश्यकता है। वह किस प्रकार का होगा यह विचारणीय है। इसके लिये पहले जीव रक्षा सभाओं को करनी होगी। समय की नजाकत देखो और आगे बढ़ो, सफलता आपके चरण चूमेगी। वन तथा वन्यजीवों को बचाने में सफल हो सकेंगे। तभी हमारा अहिंसा परमो धर्मः, यह नियम धर्म सार्थक हो सकेगा।

-आचार्य कृष्णानन्द,
ऋषिकेष

खान विष्णु की

उठी तलवारें कटे शीश,
झुकी नहीं आन विष्णु की!
बहा लहू, थमी सांसे, मगर,
रुकी नहीं तान विष्णु की!!
अमर हो जाते हैं वो लोग,
जो जाने है, शान विष्णु की!
जहाँ को दे गए सबक ऐसा,
है पेड़ों में जान विष्णु की!
दिल में खुशियाँ अपार हैं,
मैंने पाई है खान विष्णु की!

कुर्बानी का जज्बा

कुर्बानी का जज्बा पाले कौन?
अनगढ़ मिट्टी सांचों में ढाले कौन??
पेड़ों से लिपट लुटा दी जान अपनी,
पत्थर होते दिलों को साले कौन?
जीना ना सही, मरना तो सीखे उनसे,
मौत तो आनी है, उसको टाले कौन?
सारे के सारे कोयले की खान हो गए,
यहाँ कौन है उजले घर काले कौन?

-सुरेन्द्र सुंदरम, गंगानगर

पर्यावरण की चिन्ताओं से बेखबर भारत

तन को जला डालने वाली दाहक गर्मी, भीषण ठण्ड, नवम्बर-दिसम्बर में भी चलते पंखे वो भी उत्तर भारत में, अतिवृष्टि, बाढ़ों का प्रकोप, पूर्णतया सूखा, आग उगलती धरती! कभी-कभी तो लगता है जो हमने भूगोल पढ़ते समय प्रकृति की देन मनोहारी ऋतुओं, कलकल करती नदियों, हिमाच्छादित पहाड़ों, हरित वन्य प्रदेशों के विषय में पढ़ा था वो आज पूर्णतया परिवर्तित रूप में हमारे समक्ष है। क्या प्रकृति का चक्र गड़बड़ा गया है? आज वैज्ञानिक, मौसम विज्ञानी सब चकित हैं, नित नवीन आकलन होते हैं, परन्तु प्रत्यक्ष रूप में परिणाम कुछ दूसरे ही रूप में दृष्टिगोचर होता है। यदि नयी पीढ़ी को ये कहा जाय कि अभी कुछ ही समय पूर्व की बात है कि मसूरी, नैनीताल तथा शिमला आदि पर्वतीय पर्यटन स्थलों पर पंखें, कूलर होते ही नहीं थे, तो क्या वो विश्वास कर सकेंगे। विश्व में किसी स्थल पर सुनामी, भूकंप, कभी जंगलों में लगती आग का भयावह दृश्य, वन्य पशु-पक्षियों की लुप्त होती या घटती प्रजातियाँ, अनिष्ट की आशंकाएं जो आज पंडितों द्वारा नहीं अपितु आधुनिकतम विज्ञान वेत्ताओं द्वारा की जा रही हैं।

वर्षा कब और कितनी होगी, गर्मी कितनी पड़ेगी, शीत कम रहेगा या अधिक, कभी घाघ भड्डरी कवि अपने आकलनों से ही बता देते थे, कब क्या बोना चाहिए, फसल काटने का सही समय आदि। प्रकृति का रूप इतना सरल था कि स्वयं निरक्षर कृषक प्रकृति के रूप को पहचान कर अपना कर्म पूर्ण करता था और आज मौसम विभाग जहाँ पूर्ण शिक्षित व विषय विशेषज्ञ उपस्थित हैं, को अपनी गणनाओं तथा अनुमानों पर भरोसा नहीं हो पाता। मौसम विभाग घोषणा करता है अति वृष्टि की, पता चला मानसून राह में ही अटक गया और वर्षा हुई नहीं। ग्रीष्म ऋतु में गर्मी न हो कर बाद में होती है, अर्थात् अनिश्चितता। इस सब परिवर्तन के लिए कोई और नहीं हम ही उत्तरदायी हैं।

पर्यावरणविद अध्ययन कर, अनुसन्धान के रूप में नित नूतन निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं, परन्तु कभी सत्य तो कभी मिथ्या उनके अनुमान, तथ्य निराशाजनक चित्र प्रस्तुत करते हैं। पर्यावरण अर्थात् हमारे चहूं ओर का आवरण हमारी त्यों के कारण हमारे लिए विपदाजनक बन गया है। हमारी ओजोन परत जो हमारी रक्षक है स्वयं उस पर खतरा मंडरा रहा है।

पर्यावरण के सम्बन्ध में यूँ तो चिंता विश्वव्यापी है परन्तु आज हम अपने देश के संदर्भ में विचार करें तो स्थिति बहुत अधिक विस्फोटक दिखाई देती है। कारण हमारी निरंतर बढ़ती जनसंख्या और सीमित साधन। आज जब हम दुनिया में जनसंख्या के दृष्टिकोण से बस चीन से पीछे हैं और अनुमान है कि 2050 तक हमारा देश विश्व में जनसंख्या के दृष्टिकोण से शीर्ष पर होगा। विश्व के क्षेत्रफल का मात्र 2.4% और विश्व की जनसंख्या का 18%!.... संसाधनों के मामले में हम आज भी विकासशील हैं। इतनी विशाल जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूर्ण करना बहुत दुष्कर है। परिणामस्वरूप हमारे उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों पर दवाब बढ़ रहा है। पेय जल का अभाव, ऊर्जा की कमी, कंक्रीट के जंगलों में परिणित होते हरे-भरे वन्य प्रदेश, भोज्य पदार्थों की कमी तथा उपलब्ध साधनों का समान वितरण न हो पाने के कारण अव्यवस्थाएं बढ़ती जा रही हैं। हमारी कृषि भूमि बंजर बन रही है, मिट्टी की उपजाऊ ऊपरी परत 12 अरब टन मिट्टी बहकर नष्ट हो रही है मिट्टी का 60% भाग कटान, लवणता, खनिज (हानिकारक) और जनसंख्या के अनुपात में पेयजल की उपलब्धता संकट में है। बढ़ते औद्योगीकरण के दुष्परिणाम भी आज प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग आदि के रूप में अपने जौहर दिखा रहे हैं। तूफान, चक्रवात, बाढ़ें, सुनामी, भूकम्प आदि धन-जन का जो विनाश करते हैं वो सभी पर्यावरण के बिगड़ते संतुलन का परिणाम है। जलवायु, मिट्टी सभी प्रदूषण की गिरफ्त में हैं ध्वनि प्रदूषण के कारण हमारी श्रवण शक्ति प्रभावित हो रही है। श्वास लेने के लिए महानगरों में ऑक्सीजन चेम्बर्स की व्यवस्था विशिष्ठ प्रभावित लोगों के लिए व्यापार का माध्यम बन रही है, पीने के पानी के लिए मध्यम वर्ग तथा उच्च वर्ग घरों में जल शुद्धिकरण यंत्र का प्रबंध करने या

मिनरल जल पीने को विवश है और निर्धन वर्ग वही प्रदूषित आर्सेनिक तथा अन्य विषैले पदार्थ मिश्रित जल पी-पी कर घातक रोगों की चपेट में है। गर्मी व प्रदूषण बढ़ाते वाहन अब कष्टदायक लगते हैं। आग उगलती चिमनियाँ श्वास लेना दूभर बना रही हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार- हमारी पवित्र जीवन दायिनी, मोक्षदायिनी गंगा यमुना आज आचमन के व स्नान के योग्य नहीं रह गयी हैं। पर्यावरण के संतुलन के नियंताओं में प्रमुख 'हरित वन' कंक्रीट के जंगलों में बदल रहे हैं, बहुमंजिला इमारतें, शोपिंग माल्स उनका स्थान ले रहे हैं।

पर्यावरण के लिए सर्वाधिक घातक पोलीथिन को आज हमने अपने लिए अपरिहार्य बना लिया है। इस पोलीथिन के कारण नदी-नाले अवरुद्ध हो रहे हैं और यही पशुधन के लिए प्राणघातक सिद्ध हो रही है। जिस गौमाता को बचाने के लिए हम पुकार कर रहे हैं, उसका जीवन भी इसी पोलिथीन के कारण संकट ग्रस्त हो रहा है। धरती की उर्वराशक्ति को भी यही नष्ट कर रही है।

पतितपावनी नदियाँ, सागर सभी को प्रदूषित हम कर रहे हैं। उद्योगों के कारण बड़े-छोटे सभी उद्योगों का विषैला उच्छिष्ट, सीवर पम्प, दाहसंस्कार के बाद शव भी उसी नदी में बहाए जा रहे हैं। जो जल हमारा जीवन है, जिस धरती के बिना हमारा अस्तित्व नहीं है, जो वायु हमारी प्राणदायिनी है, उसका अनुचित दोहन विनाश का दृश्य तैयार कर रहा है और हम हैं कि सो रहे हैं, विपदा अपने विनाशकारी स्वरूप में आती रही है तब जरा हमारी तन्द्रा भंग होती है और हम अपना दोष दूसरों पर डालकर स्वयं को निर्दोष मान लेते हैं।

सरकार के पास तो समय ही नहीं है, इन मुद्दों पर सोच-विचार का। योजनायें बनती हैं, कागजों पर बेतहाशा धन पानी की तरह बहाया जाता है, पंचतारा होटलों में मीटिंग्स करते हुए मिनरल वाटर शीतल पेय पीते हुए तथा एयर कंडीशनर्स की हवा खाते हुए।

अब भी समय है, आवश्यकता है, हमारे स्वयं के चेतने की तथा सरकार के सजग होने की। उचित नीति निर्माण की और उससे अधिक उन नीतियों के क्रियान्वयन की। प्रयास किये गये हैं यथा दिल्ली में मेट्रो का चलाया जाना, एलपीजी से वाहनों का संचालन आदि। परन्तु भारत केवल दिल्ली में नहीं बसता और इतने कम प्रयास इतनी भीषण समस्या का समाधान के लिए ऊंट के मुख में जीरे के समान ही हैं। वनों को बचाने के लिए प्रयास सरकारी स्तर पर ही संभव हैं। नदियों में गिरने वाले दूषित पदार्थों को रोकने की व्यवस्था सरकार ही कर सकती है। परन्तु दुर्भाग्य से सरकार के पास तो इतना भी समय नहीं कि जो साधु-संत गंगा की रक्षा के लिए अपने प्राणों को भी संकट में डाले हुए अपने प्राण गँवा देते हैं या अपना बलिदान करने को तैयार हैं उनकी पुकार ही सुन ले ऋषि उत्पादन की उन पद्धतियों को अपना कर जो हमारी भूमि और व्यवस्था के अनुरूप हैं उत्पादन की गुणवत्ता तथा मात्रा बढ़ाया जाना जरूरी है। पोलिथींस पर प्रतिबंध लगाया जाना अपरिहार्य बन चुका है। सरकार द्वारा जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए सकारात्मक योजना बनाना तथा सभी पूर्वाग्रहों को त्याग कर, वोट राजनीति को छोड़कर उसको युद्ध स्तर पर लागू करना आवश्यक है। जब तक जनसंख्या वृद्धि पर रोक नहीं लगेगी, संसाधन वृद्धि के सभी प्रयास अपर्याप्त ही सिद्ध होंगे।

सरकारी प्रयासों के साथ स्वयं हमारी जागरूकता बहुत आवश्यक है, यदि हम चाहे तो पोलीथिन के प्रयोग को स्वयं रोक सकते हैं। पेपर बैग या कपड़े की थैलियों को साथ रखकर इस समस्या से बचा जा सकता है। ठेले आदि पर बिकने वाले सामानों को पोलिथीन में बेचने से बचाने में हम स्वयं योगदान दे सकते हैं। यदि हम पोलिथीन बेग में सामान नहीं लेंगे तो विक्रेता उसका प्रयोग स्वयं ही बंद कर देगा।

नवीन भवनों के निर्माण के समय पेड़ लगाने की नीति को कठोरता से लागू किया जाना आवश्यक है। इन पेड़ों के संरक्षण का उत्तरदायित्व समझना भी आवश्यक है। कुछ शहरों में ऐसी व्यवस्था की गई है कि अपना घर बनाते समय वृक्ष सरकार लगाकर देगी और उनके संरक्षण का दायित्व गृह स्वामी का होगा। ऐसा नियम सभी स्थानों पर कम से कम नए घरों के निर्माण पर कठोरतापूर्वक लागू किया जाय तो निश्चय ही धरती हरी-भरी हो सकेगी।

बहुमंजिला भवनों के निर्माण के कारण विकास की

अंधी दौड़ में धरती को वृक्ष विहीन बनाने से पूर्व ये अनिवार्य नियम बनाया जाय कि जितने वृक्ष कटेंगे उतने वृक्ष लगाना और उनकी देख-रेख का उत्तरदायित्व सम्बन्धित संस्थान का हो। एक निवेदन और यदि बच्चों के जन्मदिवस आदि पर या विशिष्ठ अवसरों पर बच्चों में वृक्ष लगाने की भावना को जागृत किया जाय, साथ ही किसी एक वृक्ष का उत्तरदायित्व यदि एक परिवार ले सके तो निश्चित रूप से पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान होगा। इसी प्रकार किसी की मृत्यु के पश्चात भी उसकी स्मृति में पेड़ लगाने का निश्चय हम लें और उसकी देख भाल परिवार के सदस्य के रूप में करें। उपहार आदि देने में भी परिस्थिति के अनुसार पेड़-पौधे उपहार में दें और इस अभियान से जुड़े रहें और उसका परिणाम सामने अवश्य आएगा। स्कूलों आदि में यद्यपि पर्यावरण को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने का कार्य किया गया है। परन्तु स्कूलों में अध्यापक तथा विद्यार्थी सभी उसको मात्र औपचारिकता समझते हैं। इसी प्रकार खानापूर्ति के लिए कभी-कभी माननीयों द्वारा भी वृक्षारोपण किया जाता है, परन्तु शायद कुछ दिन बाद वही पौधा कूड़े में ढूँढ़ने से भी नहीं मिलता। इसी प्रकार 'राष्ट्रीय सेवा योजना' आदि के शिविरों में भी वृक्षारोपण कार्यक्रम को कभी-कभी सम्मिलित किया जाता है, परन्तु लगाने के बाद उसकी देखभाल का उत्तरदायित्व किसी का नहीं होता। अत: पौधे लगाने के कार्यक्रम में व्यय हुआ धन व्यर्थ हो जाता है। नीति निर्धारण में हम पीछे नहीं बस आवश्यकता है, उन नीतियों के क्रियान्वयन की।

इसी प्रकार बहुत तीव्र आवाज में संगीत आदि नहीं बजायेंगे ऐसा निश्चय हम सभी को लेना हमारे लिए ही फलदाई होगा। अत: आइये हम इस पर्यावरण दिवस पर हम सभी शपथ लें पर्यावरण के संरक्षण की। शपथ कागजी नहीं वास्तविक रूप में। अपने स्तर पर पोलिथीन के प्रयोग को बंद करने व करवाने की, वृक्षों की देखभाल की तथा ध्वनि प्रदूषण से बचने की। यदि यह निश्चय कर हम उसका पालन कर सकें तो स्वयं को तथा आगे आनेवाली पीढ़ियों को जीवन प्रदान करने में सक्षम होंगे।

-हर्षवर्धन बिश्नोई
सहायक प्रशासनिक अधिकारी, एफडीडीआई
(भारत सरकार), रोहतक (हरियाणा)
मूल निवास- लालापुर पीपलसाना, मुरादाबाद (यूपी)

बेटी ईश्वर की अनुकंपा है

बेटियां किसी से कम नहीं है। यदि उन्हें मौका मिले तो वे सशक्तिकरण की मिशाल भी कायम कर सकती हैं। पढ़ने व खेल का सही माहौल मिले तो फिर सपनों को पंख लगते देर नहीं लगती। आज लड़कियों ने इस सोच को भी बदल दिया है कि केवल बेटा ही माता-पिता की सेवा कर सकता है। आज बेटियाँ भी अपने माता-पिता का सहारा हैं।

आज समाज में बदलाव की बयार बह रही है क्योंकि समाज की रूढ़िवादी मानसिकता धीरे-धीरे ही सही लेकिन बदल जरूर रही है। आज के दौर में बेटियाँ गौरव का विकास बनती जा रही हैं। कल्पना चावला, साइना नेहवाल समेत ऐसे अनगिनत नाम है जिन पर परिवार को नाज़ है। यह बदल रही सोच का ही परिणाम है कि आज बेटियों के जन्म पर भी खुशियाँ मनाई जाने लगी है। आज के वैज्ञानिक युग में बेटियाँ हर क्षेत्र में बेटों के साथ आगे बढ़ रही हैं। यह केवल इसलिए संभव हो पाया है क्योंकि आज की नारी शिक्षित है। शिक्षा की यह लौ समाज में फैले गहरे अंधरे को भी दूर कर सकती है।

बेटियाँ ईश्वर की अनुकंपा होती है। उनके बारे में गलत राय को बदलने के लिए 'दिमागी सोच' बदलनी होगी। जब दिमागी सोच पॉज़ीटिव होगी तो चीजे अपने आप बदलने लगेगी। बेटियों के सबसे बड़ा चैलेंज़ अपनों का सर्पोट मिलना है। आज भी घरों में लड़के और लड़कियों में भेदभाव किया जाता है। समाज को बदलने से पहले शुरूआत हमें अपने घर से करनी होगी।

बेटियों के सर्वांगीण विकास में पूरे समाज का भला है। हम दूसरों की मिसाल देते हैं कि गाँधी जी ने समाज की भलाई के लिए कितने काम किए। मेरे हिसाब से आप वर्तमान में समाज में क्या-क्या बदलाव या परिवर्तन ला सकते हैं, यह ज्यादा जरूरी है। आप भी बेटी बचाने का निजी प्रयास करेंगे तो बेटियाँ आगे बढ़ेगी और देश भी तेज़ी से तरक्की करेगा।

❒ रचना बिश्नोई
सुपुत्री श्री बलबीर सिंह भाम्भू
सिवानी मण्डी, भिवानी (हरियाणा)
मो. 9813029292

सृष्टि बचाओ : नियम अपनाओ

आज पर्यावरण संरक्षण को लेकर चारों ओर हल्ला मच रहा है। अनेकों सामाजिक, गैर सामाजिक व राजनीतिक संस्थाएँ अपने-अपने स्तर से जनमानस को जागरूक करने में लगी हैं। वास्तविक में जागरूकता तो कम दिखाई दे रही है, स्वार्थ सिद्धि कहीं ज्यादा दिखाई दे रहा है। जो मीडिया के आगे आकर कुछ पौधारोपण करते हुए फोटो खिचवाने में अपनी शान समझते हुए गर्व कर रहे हैं, धिक्कार है। गर्व करने योग्य तो स्वयं बिश्नोई धर्म के अनुयायी हैं। जिनके सैकड़ों स्त्री-पुरुषों व बच्चों ने सृष्टि की रक्षार्थ और अपने धर्म की पालनार्थ हरे वृक्षों, वनीय, जलीय, जीव-जन्तु व पशु-पक्षियों की रक्षार्थ अपने अमूल्य प्राणों को नि:स्वार्थ भाव से आहुतियाँ दी हैं व आज भी अपने धर्म की पालनार्थ पीछे नहीं हैं।

अन्य कुछ संस्थाएँ व साधु-संत जोर-शोर से रैली व जनसभाओं के माध्यम से कह रहे हैं कि पौधा लगाना पुण्य का काम है, धर्म का काम है और भी कुछ कहने से पीछे नहीं हट रहे, कह रहे हैं कि एक पौधा लगाना दस पुत्रों के बाराबर है। अगर एक पौधा लगाना दस पुत्रों के बराबर है तो मैं कहता हूँ और डंके की चोट पर कहता हूँ कि बिश्नोई नियमों की आचार संहिता अर्थात् बिश्नोई धर्म को अपनाना व उसका संरक्षण करना पूरी सृष्टि को बचाने के बराबर है।

आज राजनीतिक, मीडिया-कर्मी व अन्य संस्थाएँ जनमानस के बीच पर्यावरण को लेकर जो हाय-हुल्ला मचा रहे हैं और इसके साथ-साथ समस्त देशवासी यह भूल रहे हैं कि यह बिश्नोई धर्म के निमयों की रूप-रेखा का अभिन्न अंग है।

लगभग 550 वर्ष पूर्व श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान ने समस्त मानव जाति को सृष्टि के प्रति सचेत करते हुए 29 नियमों की आचार संहिता भेट की थी। कोई जाति या धर्म-बंधन नहीं था। यह सर्व प्राणधारियों के कल्याणार्थ थी। जिन नियमों को अपनाने वालों ने स्वयं को बिश्नोई कहा। उस समय यह धर्म उन सभी क्षेत्रों में फैला जहां-जहां गुरुवर भगवान जाम्भोजी के चरण पड़े। उस समय यह संख्या कम न थी। परन्तु किसी कारणवश अनेकों बिश्नोई अपने पूर्व धर्म-समाज, सम्प्रदाय व जाति में वापस लौट गए, क्योंकि बिश्नोई शब्द का प्रयोग न के बराबर था और धर्म का प्रचार-प्रसार भी बहुत कम रहा, जो आज भी है। जिस कारण वापसी की विलय का भ्रम पैदा हुआ। वास्तविकता में उस समय अनेक राजाओं तक ने बिश्नोई धर्म अपनाया था। इसे धर्म इसलिए कहना उचित है कि इसके अनुयायियों के पास अपना एक पवित्र ग्रंथ अर्थात् धर्म-ग्रंथ है।

आज खुशी हुई कि सर्वराष्ट्र का सर्वसमाज 29 नियमों में से कुछ नियमों की ओर बढ़ने लगा है।

क्या पौधा लगाने मात्र से पर्यावरण संरक्षण सम्भव है। बिल्कुल नहीं, क्योंकि सम्पूर्ण वसुन्धरा पर निम्न प्रदूषणों की मात्रा भी दिनों-दिन बढ़ रही है।

(1) वाणी के असंयम का प्रदूषण।
(2) राजनीतिज्ञों के झूठे वादों का प्रदूषण।
(3) ध्वनि का प्रदूषण।
(4) असत्य वाद-विवादों का प्रदूषण।
(5) जल प्रदूषण।
(6) वायु प्रदूषण।
(7) काम-क्रोध आदि को वश में न कर पाने का प्रदूषण।

इससे अधिक और क्या कहूँ। आज नहीं तो कल इन श्रेष्ठतम नियमों की ओर बढ़ना ही पड़ेगा। धर्म के रूप में मानकर बिगुल बजाना ही पड़ेगा। तभी सम्पूर्ण सृष्टि को पतन से बचाया जा सकता है।

-हरिओम बिश्नोई
गुरुद्वारा रोड, नई बस्ती, बिजनौर

भूल सुधार

इसी अंक के पृष्ठ संख्या 34 पर मुम्बई संगोष्ठी की तिथि 13-14 फरवरी प्रकाशित है जिसे अपरिहार्य कारण से बदला गया है। अब यह संगोष्ठी 6-7 फरवरी, 2016 को होगी। अत: 13-14 फरवरी को 6-7 फरवरी पढ़ा जाए।

- सम्पादक

बिश्नोई धर्म के 530वें स्थापना दिवस पर निकाली शोभायात्रा

नोखा: वर्तमान में विश्व में व्याप्त सभी समस्याओं का समाधान जांभोजी द्वारा प्रतिपादित 29 नियमों को पालन करने से ही संभव है। यह विचार बिश्नोई धर्म के 530वें स्थापना दिवस (3 नवम्बर, 2015) पर धर्म स्थापना स्थल सम्भराथल धोरे पर आयोजित समारोह में मुकाम पीठाधीश्वर आचार्य रामानंद जी महाराज ने व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि विश्व में पर्यावरण प्रदूषण, प्रतिशोध, हिंसा, ईर्ष्या, प्राकृतिक असंतुलन, धार्मिक असहिष्णुता, संप्रदायवाद आदि समस्याओं व बुराइयों से प्रत्येक व्यक्ति पीड़ित है।

इन समस्याओं का समाधान 29 नियमों का पालन करने पर ही हो सकता है। मानवमात्र के कल्याण के लिए इन नियमों का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए। स्थापना दिवस पर सबदवाणी का वाचन कर हवन किया गया। इस अवसर पर कलश स्थापना कर अमृत पाहल बनाया गया। समाज के अनुयायियों द्वारा पाहल ग्रहण कर अज्ञानवश हुए पाप का प्रायश्चित किया। इस अवसर पर 29 नियमों का दृढ़ता से पालन करने का संकल्प किया।

प्रात: मुक्तिधाम मुकाम से शोभायात्रा प्रारंभ हुई। मुकाम पीठाधीश्वर के सान्निध्य में निकाली शोभायात्रा में सैकड़ों महिला-पुरुष 29 नियम लिखे हुए बैनर तथा केसरिया ध्वज लिए हुए शामिल हुए। वे जांभोजी

बिश्नोई धर्म स्थापना दिवस पर निकली शोभायात्रा में शामिल लोगों ने दिए 29 नियमों के संदेश।

सम्भराथल धोरे पर पाहल ग्रहण करते श्रद्धालु।

महाराज द्वारा दिए गए उपदेशों को अपनाने का आह्वान कर रहे थे। इस दौरान सभी ने धर्म के मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। शोभायात्रा हरिकीर्तन करते हुए सम्भराथल धोरे पहुंची। इससे पूर्व सोमवार को रात्रि में जागरण हुआ।

बिश्नोई सभा, सिरसा ने धर्म स्थापना दिवस मनाया

सिरसा: बिश्नोई सभा, सिरसा ने 3 नवंबर, 2015 को बिश्नोई धर्म स्थापना दिवस मनाया। 530वें धर्म स्थापना दिवस के उपलक्ष में मन्दिर प्रांगण में वृहद् यज्ञ हवन का आयोजन किया गया जिसमें भारी संख्या में बिश्नोई परिवारों ने उपस्थित होकर यज्ञ में आहुति डाली व पाहल ग्रहण किया। श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के द्वारा बताए गए नियमों एवं मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। अंत में सभी ने प्रसाद ग्रहण किया। सभा की ओर से सभी आगन्तुकों को इस शुभ दिवस पर मंगल कामनाएं प्रस्तुत की गई।

अबोहर में 530वां स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया

530वां बिश्नोई स्थापना दिवस अबोहर पंजाब के श्री बिश्नोई मंदिर में 3 वम्बर, 2015 को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। सुबह 120 सबदों का पाठ के बाद हवन और पाहल किया गया। सभी ने पाहल लेने के साथ ही गुरु महाराज द्वारा बतलाये गये नियमों पर चलने की शपथ ली। सुबह का कार्यक्रम की शुरूआत मेहराणा धोरा के महन्त मनोहरदास जी मेहराणा धोरा के सानिध्य में शुरु हुआ। इससे पहले स्वामी सच्चिदानन्दजी के सान्निध्य में रात्रि जागरण किया गया। मुख्य समारोह के मुख्य अतिथि श्री सुरजीत ज्याणी जी, माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री पंजाब सरकार मंदिर परिसर में पहुचे। इनके साथ ही समारोह अध्यक्ष अ. भा. बिश्नोई महासभा के प्रधान श्री हीराराम जी भंवाल, विशिष्ट अतिथियों में बिश्नोई महासभा उपाध्यक्ष श्री हुकमाराम जी बिश्नोई बीकानेर, वरिष्ठ सदस्य और व्यवसायी श्री राजाराम जी धारणियां, कर्नल सज्जन जी डेलू, रिटायर्ड IPS रामसिंह जी कालीराणा, बीबी हरबख्श कौर, चेयरपरसन भागसिंह खालसा महिला कॉलेज, बिश्नोई महासभा महासचिव श्री विनोद जी धारणियां, श्री हनुमान सिंह जी गोदारा, प्रधान गुरु जम्भेश्वर संस्थान भवन, दिल्ली, श्री रूपाराम जी बिश्नोई महासचिव जांम्भा ट्रस्ट, श्री सुभाष जी कड़वासरा, प्रधान बिश्नोई महासभा जिला श्री गंगानगर, श्री कृष्ण जी जादूदा, प्रधान बिश्नोई महासभा मंडी डबवाली, श्री इंद्रजीत जी धारणियां, सचिव बिश्नोई मंदिर मंडी डबवाली, श्री रामपाल भवाद प्रधान बिश्नोई टाईगर फोर्स, उपप्रधान श्री रामनिवास जी बुधनगर बि.टा. फोर्स, महासचिव श्री औम जी लोल बि.टा. फोर्स (जोधपुर), श्री सुलतान जी धारणियां, प्रधान गौशाला मुकाम, श्री संजय जी डेलू, प्रधान गौशाला सुखचैन तथा अन्य गणमान्य सज्जनों व आसपास इलाके के धर्म प्रेमियों, माताओं-बहनों, युवाओं-बुजुर्गों सहित सैकडों लोग मंदिर परिसर में पहुंचे और भीड़ से पंडाल खचाखच भर गया। सबने पाहल लेने के बाद गुरु जम्भेश्वर भगवान का भगवां झण्डा फहराकर शीश झुकाया। इन सब मेहमानों का स्वागत जिला फाजिल्का के प्रधान श्री गंगाबिशन जी भादू तथा जिला फाजिल्का व जिला मुक्तसर की कार्यकारिणी ने माल्यार्पण व पुष्प वर्षा से किया।

सारे बिश्नोइयों के चेहरे खुशी से लहरा रहे थे। मेले की शोभा देखते ही बनती थी। हिसार से अमर ज्योति समाज की प्रमुख की स्टाल मेले की शोभा बढ़ा रही थी। खेलकूद व शिक्षा में अव्वल रहने वाले 35 बच्चों को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि श्री सुरजीत जी ज्याणी मंत्री जी ने बिश्नोई धर्मशाला के लिये पांच लाख रुपयों की घोषणा की। आपको याद होगा कि दो साल पहले जब ज्याणी साहब पर्यावरण मंत्री थे तब भी सतरह लाख रुपयों की लागत से सीतोगुन्नो, डबवाली रोड पर गुरु जम्भेश्वर सैंचुरी गेट पंजाब सरकार से मंजूर करके बनवाया था। आये हुये मेहमानों का पंजाब सभा ने शाल व मोमेंटो भेंट कर धन्यवाद किया। अंत में गुरु जम्भेश्वर भगवान की जयघोष से आसमान गूंज उठा। सबने भंड़ारे में देसी घी के प्रसाद के साथ लंगर ग्रहण किया। गुरु जम्भेश्वर सेवक दल ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना सहयोग दिया।

-राजीव गोदारा, प्रधान

अ.भा. बिश्नोई महासभा, श्री मुक्तसर साहिब

म.नं. 1, राधा स्वामी कॉलोनी, सिविल लाइन्स के सामने

अबोहर, जिला फाजिल्का (पंजाब)

बिश्नोई धर्म स्थापना दिवस पर जन चेतना रैली आयोजित

दो-दो की पंक्ति में गौ-माता, धरती माता, प्रकृति माता तथा भारत माता की जयगान का उद्घोष करते नन्हे-मुन्हे बाल-गोपाल, बिश्नोई समाज के प्रकृति प्रेम को प्रदर्शित करते आलेखों के साथ समाज की मातृशक्ति तथा वृक्ष लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश देती समाज की तरुणाई...

दृश्य था उपनगर पुर-भीलवाड़ा में बिश्नोई समाज के 530वें धर्म स्थापना दिवस के पवित्र अवसर पर बिश्नोई जागृति मंच द्वारा आयोजित पर्यावरण चेतना रैली का।

सर्वप्रथम श्री बिश्नोई मंदिर में प्रभात में हवन कर पाहल बनाकर उत्सव का शुभारम्भ किया गया, तत्पश्चात देवालय से ही रैली को प्रारम्भ किया गया। नगर के मुख्य मार्गों से होती हुई शोभायात्रा पुन: मन्दिर पहुंची जहां सभी को प्रसाद वितरण किया गया। जिसमें अन्य सामाजिक संगठनों ने भी सहयोग दिया।

-रोहित कुमार बिश्नोई, सचिव

बिश्नोई जागृति मंच, पुर भीलवाड़ा

मो.: 9887440029

संत साहबराम स्मारक का जीर्णोद्धार प्रारम्भ

जाम्भाणी साहित्य में संत साहबराम जी का स्थान अत्यन्त ही गौरवमयी है। वे जांभाणी साहित्य के एकमात्र महाकवि के रूप में विख्यात है। साहबराम जी का जन्म संवत् 1871 में राजस्थान के हुंडिया गांव में हुआ था। वे संत गुलाब दास जी के शिष्य थे। संत साहबराम जी ने भी संत विल्होजी की समाधि पर रामड़ावास में मंदिर बनवाया था। कालांतर में साहबराम जी ने गृहस्थ जीवन में प्रवेश कर हरियाणा के हिसार जिले के लांधड़ी गांव को अपना निवास स्थान बनाया था। सम्वत् 1948 में अपने मृत्यु से कुछ दिन पूर्व वे पंजाब में अबोहर के पास दुतारावाली गांव में चले गये थे। वहीं पर उनका निधन हुआ था। दुतारावाली गांव में ही उनकी समाधि पर विशाल स्मारक बना हुआ है। अब यह स्मारक सवा सौ वर्ष पुराना होने के कारण जर्जर हो चुका था। इसके जीर्णोद्धार की मांग साहित्यकारों व प्रबुद्धजनों द्वारा निरंतर की जा रही थी। उनकी इस मांग का आदर करते हुए उनके परिजनों ने इसका जीर्णोद्धार प्रारम्भ करवाया है।

संत साहब राम स्मारक के जीर्णोद्धार का शुभारम्भ 22 नवंबर, 2015 को पूज्य स्वामी राजेन्द्रानन्द जी के कर कमलों द्वारा गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में किया गया। इससे पहले 21 नवंबर की रात्रि को स्वामी राजेन्द्रानन्द जी व स्वामी सुखदेव मुनि द्वारा भव्य जागरण का आयोजन किया गया। जिसमें साहबराम जी द्वारा लिखी गई साखियों, भजनों, हरजसों व आरती आदि का गायन किया गया व गुरु जाम्भोजी की शिक्षाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला गया।

22 नवंबर को प्रात: सबदवाणी के पाठ के साथ विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् वैदिक मंत्रों के साथ जीर्णोद्धार कार्य की नींव पूज्य स्वामी राजेन्द्रानन्द जी के कर कमलों से रखी गई। इस अवसर अपने विचार प्रकट करते हुए स्वामी राजेन्द्रानन्द जी ने कहा कि संत साहबराम जी का बिश्नोई साहित्य व समाज में योगदान अतुलनीय है। उन्होंने जम्भसार लिख कर बिश्नोई समाज का इतिहास सुरक्षित रखा था। यदि साहबराम जी जम्भसार न लिखते तो आज हमारा आधा इतिहास लुप्त हो गया होता। उनकी अन्य रचनाएं - सार बतीसी, अमर चालिसा, महामाया की स्तुति, सार सबद गुंजार भी उच्चकोटि की आध्यात्मिक रचनाएं हैं। ऐसे संत महापुरुष की समाधि पर भव्य स्मारक बनना चाहिए तथा उनकी धरोहर को सुरक्षित रखना चाहिए।

इस अवसर पर बोलते हुए डॉ. सुरेन्द्र कुमार, सम्पादक, अमर ज्योति ने कहा कि संत साहबराम जी की वाणी व विचारधारा को पूरे विश्व में पूरे विश्व में फैलाना चाहिए क्योंकि यह वाणी गुरु जाम्भोजी के चरित्र से पवित्र हुई है इसलिए इसमें लोक कल्याण की भावना है। भाग सिंह खालसा कॉलेज, अबोहर के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष श्री विनोद भादू ने कहा कि साहबराम जी का व्यक्तित्व व कृतित्व अत्यंत विशाल था। आज उस पर शोध करने की आवश्यकता है। बिश्नोई सभा फाजिल्का के प्रधान श्री गंगाविशन भादू ने इस कार्य में हर प्रकार का सहयोग देने का आश्वासन दिया। मुख्य अतिथि श्री ओम प्रकाश सिगड़, जयपुर ने अपने उद्बोधन में कहा कि संत महापुरुषों को याद करना व उनकी धरोहर को जीवित रखना हमारा कर्तव्य है क्योंकि वे हर समय हमारी सहायता करते हैं। उन्होंने बताया कि स्मारक पूरा होने पर इसके उद्घाटन के अवसर पर विशाल जांभाणी हरिकथा व संगोष्ठी आयोजित की जायेगी। श्री इन्द्रपाल एडवोकेट ने बताया कि इस स्मारक को संत साहबराम शोध संस्थान के रूप में विकसित किया जाएगा तथा यहां एक भव्य पुस्तकालय स्थापित किया जायेगा। इस स्मारक के निर्माण में 25 लाख रुपये श्री ओमप्रकाश सिगड़, जयपुर, 25 लाख रुपये श्री इन्द्रपाल, सुरेन्द्रपाल, महेन्द्रपाल बागड़िया, दुतारावाली, 5 लाख श्री अशोक कुमार, सुनील कुमार, नरेश कुमार, रमेश कुमार राहड़, 3 लाख 25 हजार रुपये लवेन्द्र राहड़, 1 लाख ज्ञान चन्द राहड़ (दुतारावाली), 51 हजार गुरदत्त जी थापन, अबोहर, 11 हजार स्व. श्री जगदीश जी राहड़, दुतारावाली, 10 हजार श्री सुभाष जोहड़, लांधड़ी, 5100 रुपये श्री गंगाविशन भादू, प्रधान बिश्नोई सभा, अबोहर ने सहयोग राशि के रूप देने का संकल्प लिया। इस अवसर पर बिश्नोई सभा, पंजाब के पूर्व प्रधान श्री सुरेन्द्र गोदारा, सेवक दल, पंजाब प्रधान श्री राधेश्याम गोदारा, श्री शिव कुमार सहारण, प्रधान श्री बिश्नोई सभा गंगानगर, श्री संजय डेलू, प्रधान सुखचैन गऊशाला, श्री रामकुमार डेलू, संरक्षक-जीव रक्षा सभा, पंजाब, डॉ. रणजीत सिंह, सरदारपुरा, श्री विष्णु धतरवाल, सदस्य जांभाणी साहित्य अकादमी, सदस्य, श्री इन्द्रपाल एडवोकेट, श्री ज्ञानचन्द राहड़, तहसीलदार सहित समाज के अनेक गणमान्य व्यक्ति व साहबराम जी के परिजन उपस्थित थे।

- रमेश राहड़, दुतारावाली

गुरु जम्भेश्वर वैश्विक चिन्तक एवं विश्व के पहले पर्यावरणविद् थे-प्रो. टंकेश्वर कुमार

पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर व हिन्दी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 'श्री गुरु जम्भेश्वर की वाणी- वैश्विक परिदृश्य एवं उपादेयता' विषय पर पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ के प्रांगण में 6 नवम्बर, 2015 को एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठि का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के कुलपति एवं उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि डा. टंकेश्वर कुमार ने कहा कि गुरु जम्भेश्वर की हमें वाणी के बारे में अध्ययन करना चाहिए। गुरु जम्भेश्वर की वाणी में हमें नजर एक ही चीज आती है और वह है गुरु जम्भेश्वर की वाणी में वैश्विक चिन्तन, वैश्विक कल्याण, वैश्विक भलाई अर्थात् प्राणी मात्र का कल्याण और परोपकार।

उन्होंने कहा कि इस आयोजन से मुझे बहुत गर्व का अनुभव हो रहा है, क्योंकि जिनके नाम से संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है, उन्हीं के नाम से हिसार स्थित गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय का मैं गुरु जाम्भोजी की कृपा से कुलपति हूँ। गुरु जाम्भोजी विश्व के प्रथम पर्यावरणविद् कहलाते हैं, क्योंकि उनकी प्रकृति रक्षा की बातें सर्वविदित हैं। उन्होंने मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए कहा कि गुरु जाम्भोजी दुनिया के पहले पर्यावरणविद हुए हैं। गुरु जी ने प्रकृति विशेषतौर पर पशु-पक्षियों तथा पेड़-पौधों तक की रक्षा के लिए एक बहुत बड़ा महाअभियान अथवा यूं कहें कि उन्होंने एक महा जनान्दोलन चलाकर आम लोगों को प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति जागृत किया।

उन्होंने कहा कि खेजड़ली का महाबलिदान जिसमें बिश्नोई पंथ के 363 वीर-वीरांगना स्त्री-पुरुष और बच्चों ने हंसते-हंसते वृक्षों की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। उन वीरों का नारा था कि, 'सिर सांठे रूंख रहै-तो ही सस्तो जाण' अर्थात् यदि हमारे सिर कटने के बदले यदि जीवनदाता वृक्षों की रक्षा होती है तो भी यह हम सस्ता सौदा मानते हैं। सिर चाहे कट जाये मगर पेड़ नहीं कटना चाहिए। आज के समय में उनकी वाणी, उनके उपदेश और उनके द्वारा बताये 29 नियमों को अपना कर सम्पूर्ण विश्व के मानव अपने कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

इस अवसर पर बीज वक्ता के रूप में बोलते हुए कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर बाबूराम ने कहा कि गुरु जम्भेश्वर का काल यानि मध्यकाल अन्धविश्वास एवं सामाजिक संकीर्णता ग्रस्त काल था। उस समय छुआछूत, जात-पात एवं साम्प्रदायिकता का जोर था। ऐसे भयानक दौर में गुरु जाम्भोजी ने जीव रक्षा, सामाजिक, धार्मिक समभाव और जीयो और जीने दो का नारा दिया। उन्होंने जीवन जीने के लिए और मानवता एवं पर्यावरण को खुशहाल बनाने के लिए 29 नियमों का महान सिद्धान्त दिया जो एक सर्वशुद्ध शाकाहारी, यज्ञ प्रिय, जीव-वृक्ष रक्षक पंथ बन गया। उन्होंने आम

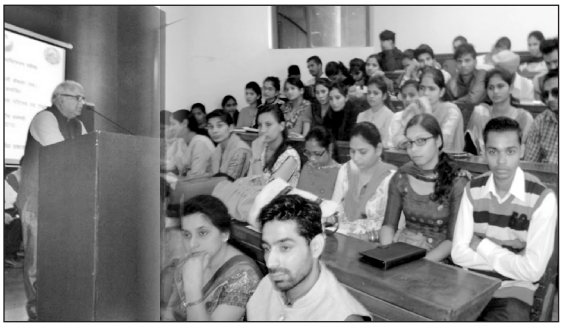

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठि को संगोष्ठि को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं तकनिकी विश्वविद्यालय, हिसार के कुलपति प्रोफेसर टंकेश्वर कुमार।

लोगों और विद्यार्थियों से आह्वान किया कि आप सब गुरु जम्भेश्वर प्रदत्त 29 नियमों और सबदवाणी को ग्रहण, पठन और मनन करके मानवता ही नहीं बल्कि प्राणी मात्र के कल्याण के लिए कार्य करें।

डा. कृष्णलाल बिश्नोई बीकानेर ने कहा कि इन धर्म-नियमों और गुरु जम्भेश्वर की वाणी में लोक मंगल की भावना एवं नैतिकता कूट-कूट कर भरी हुई है। विषय विशेषज्ञ के तौर पर उन्होंने गुरु जम्भेश्वर की वाणी एवं सर्वधर्म समभाव पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि श्री गुरुदेव ने किसी धर्म विशेष का कहीं विरोध नहीं किया।

डा. सुरेन्द्र कुमार महासचिव, जाम्भाणी साहित्य अकादमी बीकानेर ने अकादमी की ओर से सभी का स्वागत किया और आयोजन के लिए विश्वविद्यालय प्रशासन का आभार भी व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि अब तक गुरु जाम्भोजी की वाणी एवं साहित्य आम लोगों एवं साहित्यकारों इत्यादि के पास नहीं पहुंच पाया इसलिए लोगों को गुरु जम्भेश्वर की वाणी के महत्व का पता नहीं लग पाया।

विभागाध्यक्ष एवं संगोष्ठी संयोजक प्रोफेसर अशोक सभ्रवाल तथा अकादमी के महासचिव डा. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई ने सयुंक्त रूप से आयोजन की सफलता पर प्रसन्ता व्यक्त करते हुए बताया कि गुरु जम्भेश्वर की वाणी-वैश्विक परिदृश्य एवं उपादेयता की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस अवसर पर 15 विषय विशेषज्ञ तथा 35 शोध-पत्र वाचकों ने अपने विचार रखे। हिन्दी विभाग के प्रोफेसर नीरजा सूद, प्रोफेसर बैजनाथ प्रसाद, प्रोफेसर सत्यपाल सहगल और डॉ. गुरमीत सिंह इस कार्यक्रम के दौरान में परामर्शदाता के रूप में मार्गदर्शन किया।

इस अवसर पर डॉ. ब्रह्मानन्द, डॉ. किरण नाहटा, बीकानेर, डॉ. कश्मीरी लाल, डॉ. जयकुमार, डॉ. रणधीर, आर.के. बिश्नोई, दिल्ली, अनिल बिश्नोई, डॉ. हरपाल ग्रोवर, संदीप जी धारणियां, श्री विनोद जम्भदास, विनोद भादू, श्रीमती योगिता, गीता कुमारी, शर्मिला, डॉ. रितू भानोट, डॉ. रोहताश कुमार जींद, डॉ. राजेश

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मंचासीन अतिथिगण।

पूर्व कुलपति डॉ. रामगोपाल को साहित्य सेवा के लिए सम्मानित करते महामहोपाध्याय वेद प्रकाश शास्त्री व अकादमी के पदाधिकारी।

पासवान दिल्ली, पृथ्वी सिंह, कुलविन्दर सिंह, डॉ. अनीश कुमार, चिरंजीलाल, पर्वज्योत कौर, बलराम, मांगीलाल सिहाग, राममूर्ति सिहाग, तारावती, विकास बिश्नोई, मोहनलाल बिश्नोई आदि ने शोध-पत्र प्रस्तुत किए। समापन सत्र की अध्यक्षता गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के पूर्व कुलपति महामहोपाध्याय डॉ. वेद प्रकाश शास्त्री ने की व अंग्रेजी विभाग के प्रोफेसर डॉ. अक्षय कुमार विशिष्ट अतिथि थे। बनवारी लाल सहू ने इस सत्र में संगोष्ठी की उपलब्धि पर विस्तार से प्रकाश डाला। डॉ. अक्षय कुमार ने अपने सम्बोधन में कहा कि गुरु जाम्भोजी की विचारधारा मानव मात्र के लिए पथ प्रदर्शक है। हमें उनकी वाणी पर चर्चा तक सीमित न रहकर उसे आत्मसात करना चाहिए। आपने गुरु जाम्भोजी की वाणी का अंग्रेजी में अनुवाद करने का आश्वासन भी दिया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. वेद प्रकाश जी आचार्य ने गुरु जाम्भोजी की शिक्षाओं को पूरे विश्व के लिए लाभदायक बताया। आपने कहा कि गुरु जाम्भोजी का चिन्तन वैश्विक था। आज विश्व की सभी समस्याओं का समाधान गुरु जाम्भोजी की वाणी में मिलता है। अन्त में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. अशोक सभरवाल ने सभी अतिथियों व प्रतिभागियों का धन्यवाद किया। इस सत्र का संचालन डॉ. सुरेन्द्र कुमार ने किया। इस अवसर पर साहित्य सेवा के लिए वयोवृद्ध साहित्यकार डॉ. रामगोपाल बिश्नोई, पूर्व कुलपति व स. एम.एस. चांदला सेवानिवृत आई.ए.एस. को अकादमी की ओर से अभिनन्दन पत्र व शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया।

-पृथ्वीसिंह बैनीवाल बिश्नोई
सैक्टर-14, पंचकूला, मो.: 094676-94029

13-14 फरवरी को मुम्बई में होगी जांभाणी साहित्य संगोष्ठी

हर वर्ष की भांति 2016 ई. में भी जांभाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर की ओर से जांभाणी साहित्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की जायेगी। इस बार यह दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी श्री गुरु जम्भेश्वर चेरिटेबल सोसाइटी, नायगांव के संयुक्त तत्वावधान में 13-14 फरवरी, 2016 को नायगांव (मुम्बई) स्थित श्री बिश्नोई धर्मशाला (नजदीक जूचन्द्र कॉलेज के पीछे नायगांव, ईस्ट, नायगांव रेलवे स्टेशन से 2 कि.मी. दूर व मुम्बई-अहमदाबाद हाइवे से 1.5 कि.मी. दूर) में आयोजित की जायेगी। इस संगोष्ठी में भारतवर्ष के विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों के प्राध्यापकगण, आचार्यगण व स्वतंत्रत अध्येता विद्वान भाग लेकर **'गुरु जाम्भोजी की वाणी में प्रतिबिम्बित लोक मंगल'** विषय पर विचार मंथन करेंगे। इस संगोष्ठी में गुरु जाम्भोजी के जीवन चरित्र, प्रतिपादित धर्म-नियम व सबदवाणी पर गंभीरता से विचार-विमर्श किया जायेगा। संगोष्ठी में भाग लेने के इच्छुक महानुभावों से अनुरोध है कि वे अपने आगमन की सूचना नीचे लिखे संपर्क सूत्रों पर 15 जनवरी, 2016 तक अवश्य दें ताकि आवास आदि की समुचित व्यवस्था की जा सके। संगोष्ठी में शोध-पत्र भेजने के इच्छुक महानुभावों से अनुरोध है कि वे विषय-उप विषय व शोध-पत्र भेजने संबंधी नियमों को विस्तार से www.jambhani.com पर देखें व निर्धारित समय सीमा में अपना शोध-पत्र भेजें। पूर्व में भेजे गए व स्वीकृत किए गए शोध-पत्र ही प्रस्तुत करने की अनुमति होगी। **सम्पर्क सूत्र :** -

डॉ. सुरेन्द्र कुमार, 098121-08255, 074045-08255
हरिनारायण भादू - 075684-93437, 85600-56054

निवदेक :

स्वामी कृष्णानन्द आचार्य,
अध्यक्ष, जांभाणी साहित्य अकादमी

हीरालाल इराम,
अध्यक्ष, श्रीश्री गुरु जम्भेश्वर चेरिटेबल सोसाइटी, नायगांव (मुम्बई)

मुख्य अष्ट धाम

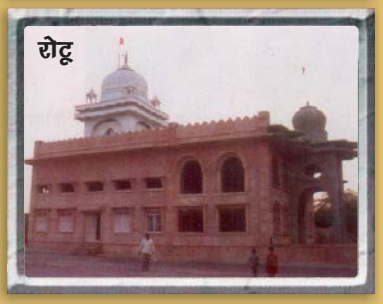

उनतीस धर्म नियम

- तीस दिन सूतक रखना।
- पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
- प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- शील का पालन करना व संतोष रखना।
- बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- द्विकाल संध्या-उपासना करना।
- संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- पानी, ईंधन और दूध को छान कर प्रयोग में लेना।
- वाणी विचार कर बोलना।
- क्षमा-दया धारण करना।
- चोरी नहीं करनी।
- निन्दा नहीं करनी।
- झूठ नहीं बोलना।
- वाद-विवाद का त्याग करना।
- अमावस्या का व्रत रखना।
- विष्णु का भजन करना।
- जीव दया पालणी।
- हरा वृक्ष नहीं काटना।
- काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- रसोई अपने हाथ से बनानी।
- थाट अमर रखना।
- बैल बधिया नहीं कराना।
- अमल नहीं खाना।
- तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- भांग नहीं पीना।
- मद्यपान नहीं करना।
- मांस नहीं खाना।
- नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

विक्रमी सम्वत् 2072 मार्गशीर्ष की अमावस्या

लगेगी : 10.12.2015, गुरुवार, अपराह्न 3.24 बजे

उतरेगी : 11.12.2015, शुक्रवार, अपराह्न 3.59 बजे

विक्रमी सम्वत् 2072 पौष की अमावस्या

लगेगी : 09.01.2016, शनिवार, प्रात: 7.53 बजे

उतरेगी : 10.01.2016, रविवार, प्रात: 7.00 बजे

विक्रमी सम्वत् 2072 माघ की अमावस्या

लगेगी : 07.02.2016, रविवार, रात्रि 10.20 बजे

उतरेगी : 08.02.2016, सोमवार, रात्रि 8.08 बजे

प्रमुख मेले व पर्व

चिलत नवमी मेला :

लालासर साथरी शुक्रवार 4.12.2015

पुजारी : **बनवारी लाल सोढ़ा,** (जैसलां वाले)
मो.: 09416407290

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/Regd. NP/HSR/01/2014-2016
L/WPP/HSR/03/14-16

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

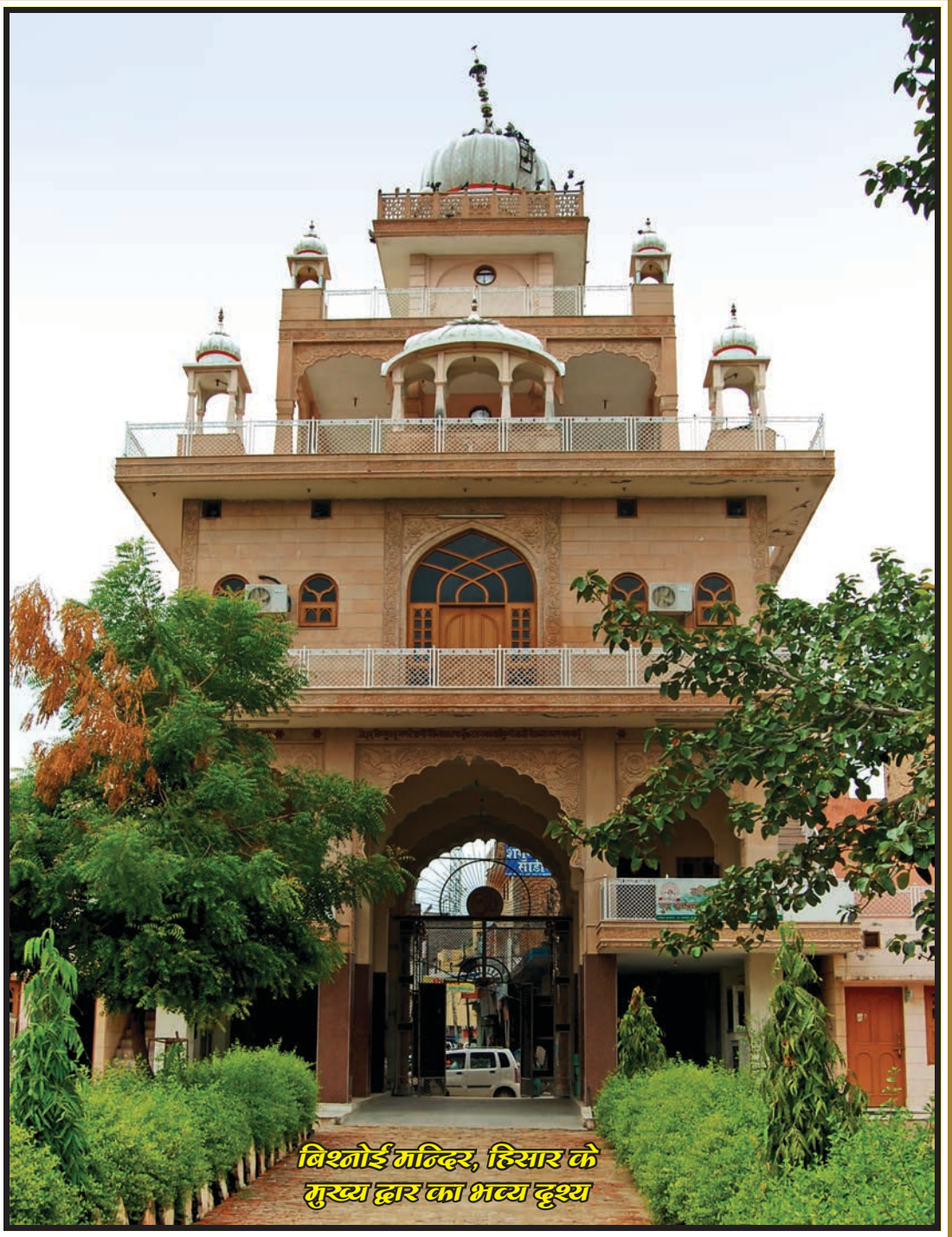

बिश्नोई मन्दिर, हिसार के
मुख्य द्वार का भव्य दृश्य

DOREX Printers 9896011117

मुद्रक, प्रकाशक श्री सुभाष देहडू, प्रधान बिश्नोई सभा, हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 दिसम्बर, 2015 को मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।